ISBN Number: 978-93-341-3377-6  (Book)
ISSN 2229-547X (online)

# विदेह ४०३ म अंक ०१ अक्टूबर २०२४ (वर्ष १७ मास २०२ अंक ४०३)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in ]



**विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्**



**विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका**

**सम्पादक:** गजेन्द्र ठाकुर।






Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

**Font/ Keyboard Source**: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.



Cover designed by AUM GAJENDRA THAKUR

Videha e-Journal: Issue No. 403 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

# अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

**पद्य**






## १.०.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१

मिथिलामे बाढ़िक प्रकोप आइ काल्हि खूब अछि मुदा तकर अछैत साहित्य अकादेमीक मैथिली प्रभागक कागची कार्यक्रम सभ चलिये रहल अछि। लोक सभक समस्यासँ साहित्य अकादेमीक मैथिली प्रभागकेँ कोनो सरोकारे नै छै, कोठली आ दफ्तरेमे अन्तर्राष्ट्रीय स्तरक गोष्ठी सभ भऽ जाइ छै, अभिलेखने तँ करबाक छै, मुदा तै किरदानीक अभिलेखन एतऽ कएल जा रहल अछि।

२.१

समानान्तर धाराक लोककेँ सतर्क रहबाक आवश्यकता अछि। मैथिली साहित्यमे ब्राह्मणवादी प्रवृत्ति अछि बा नै, ऐपर इण्डिया हैबीटेट सेण्टरक भारतीय भाषा महोत्सव मे १२ साल पहिने हमर उत्तर अन्य प्रतिभागी माने नचिकेता, देवशंकर नवीन आ विभा रानीसँ भिन्न छल। हमर उत्तर छल जे जँ आकाशवाणी दरभंगाक गप करी तँ उत्तर हँ अछि मुदा सप्तरी आदिक एफ.एम.क गप करी तँ उत्तर नै अछि; जँ एन.बी.टी., सी.आइ.आइ.एल., साहित्य अकादेमीक मैथिली प्रकाशन/ काज देखब तँ उत्तर हँ अछि मुदा विदेहक गद्य-पद्य-अनुवाद आदिक संकलन देखब (विदेह सदेह १-३६, ऐ मे विदेह सदेह २८ अनूदित साहित्यक संकलन अछि- पी.डी.एफ.देखू विदेह पेटारमे http://www.videha.co.in/videha.htm पर) तँ उत्तर नै अछि। जँ घर बाहर, भारती-मण्डन, अंतिका, मिथिला दर्शन आदिकेँ देखब तँ उत्तर हँ अछि आ विदेहकेँ देखब तँ उत्तर नै अछि। ई विदेहमे अभिलेखित सेहो भेल।

आ आइयो हमर उत्तर सएह अछि, माने मधुबनी-दरभंगा बनाम सहरसा-सुपौल-कोसी मुख्य धाराक ब्लैकमेलर सभक किरदानी छिऐ।

अरविन्द ठाकुर जी कैं आ मारिते रास आनो लोककैं बहुत रास लोकपर आ बहुत रास बात पर आस्था छलन्हि, किछुपर ताधरि (हुनकापर विदेह विशेषांक निकलबा काल धरि) आस टुटलो छलन्हि, किछुपर आगाँ जा कऽ टुटलन्हि जकर एकटा साधारण विवरण आगाँ देल जा रहल अछि। किछु साहित्यकार साहित्य अकादेमीक एक चण्डाल चौकरी द्वारा सम्मानित भेल, किछु दोसर द्वारा, किछु दुनू द्वारा; आ पुनः सिद्ध भेल जे ओ लोकनि जे मधुबनी-दरभंगा बनाम सहरसा-सुपौल-कोसी करै छला से मुख्य धाराक ब्लैकमेलिंग टेक्निक मात्र अछि। सम्पादकीय आ लेखकीय प्रतिबद्धता रखबा लेल समानान्तर धाराक लोककैं सतत सतर्क रहबाक आवश्यकता अछि। अरविन्द ठाकुर जी दुनू ग्रुप द्वारा बारल छथि से सहरसा-सुपौल-कोसी करैबलाक मुँहपर समधानल चमेटा अछि, किछु गोटे रेट बढ़बैले छद्म करै छथि मुदा किछु लोक बिकाऊ नै होइ छथि।

२.२

## संपादकक दायित्वबोधः संदर्भ अंतिका, गौरीनाथ एवं अरविन्द ठाकुर

फेसबुक वर्तमानक साहित्य पत्रिका अछि। ओना इंटरनेटक आन माध्यम स हित फेसबुकपर मैथिली साहित्यकैं पसारबाक श्रेय विदेहे केर छै। फेसबुकप र बहुत रास बात होइत रहैत छै। ताजा-
ताजी समाचार ई जे अंतिका पत्रिकामे छपल अनुवाद सभक संग्रह अंतिके पत्रिकाक संपादक गौरीनाथ (पहिने अनलकांत नामसँ रहथि) बहरिया बसा तक नामसँ पोथी प्रकाशित भेल। एहि पोथीक पोस्टपर अरविन्द ठाकुरजी अपना द्वारा कएल आ अंतिकामे प्रकाशित अनुवाद नै हेबाक वा ओकर चर्च नै हेबाक बात उठेलाह। अरविन्दजीकैं उत्तर दैत संपादक गौरीनाथ नकारि दे लाह जे अंतिकामे अरविन्दजीक अनुवाद प्रकाशित भेल छनि। आ ताहिपर अरविन्द जी फेसबुकपर अंतिकामे प्रकाशित अनुवाद भेल रचनाक फोटो

सहित एक टिप्पणी देलाह। ओहि टिप्पणीमे विदेहक चर्च सेहो छल। विदेहक अरविन्द ठाकुर विशेषांक 01 नवम्बर 2015 अंक 189 मे प्रकाशित भेल रहए। एहिमे हुनकासँ किछु प्रश्नो पूछल गेल रहनि जाहिमेसँ एकटा अंतिका पत्रिकाक ऊपर छल। ओहि समयमे जे हुनक उत्तर छलनि से उक्त विशेषांकमे छपल। विदेह अपन पाठक लेल अरविन्दजीक ई टिप्पणीकेँ फेसबुकसँ लऽ कऽ एहि अंकमे दऽ रहल अछि जाहिसँ भविष्यमे पाठक लग सभ तथ्य सामने रहै। ओना पाठक जनिते हेता जे ओही विशेषांकमे अरविन्दजीसँ "मैथिली साहित्यिक राजनीतिमे सरहसा-सुपौल पीठ"पर सेहो प्रश्न भेल रहनि। अरविन्दजी ओहि समयमे एक तरहसँ एहि प्रश्नेकेँ खारिज केने रहथि। जे साहित्य केर सजग पाठक छथि से विदेह द्वारा पूछल गेल प्रश्नक महत्व 2024 मे बूझि सकै छथि। अरविन्दजी चाहथि तऽ एक बेर फेर एहि प्रश्न सभक उत्तर दऽ सकै छथि। विदेहक अरविन्द ठाकुर विशेषांक केर पोथी रूप "स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व" केर नामसँ 2020 मे प्रकाशित भेल। तऽ आउ पढ़ी अरविन्दजीक ई टटका टिप्पणी जे अंतिका पत्रिकाक संपादकक ऊपर अछि। एहि टिप्पणीकेँ देबाक एकटा लाभ ईहो जे भविष्यमे कोनो लोक एकटा संपादकक की आ केहन दायित्वबोध होइत छै से जानि सकताह। पाठक तारतम्यता लेल विदेहक उक्त विशेषांक सेहो पढ़थि-

गौरीनाथ Gouri Nath उर्फ अनलकांत जी,

संपादक, अंतिका

महोदय,

अहां झूठ बाजि रहल छी अथवा सांच कें झांपि रहल छी अथवा दुनू क्रिया ए के संग कए अपन अपराध कें मेटाबै लेल बात कें गोलिआए रहल छी।अहां क प्रत्युत्तर सं एकटा संपादकक रूप मे अहांक क्षमता आ जिम्मेदारी पर सं देहक प्रश्नचिंह त ठाढ़ होइते अछि, व्यक्ति रूप मे सेहो अहांक अविश्वसनीय ता प्रकट होइत अछि।

'अंतिका' मे हमरा द्वारा अनुदित कथासभ सं संबंधित हमर सूचना  पर अहां क अज्ञानजनित प्रत्युत्तर निराशाजनक अछि।प्रथमदृष्टया ओकरा सरसरी न जर सं देखि,अहां कें अपन स्नेहाधीन मानि, हम दू पंक्ति लिखि हंसि कए टा रि देलहुँ।किन्तु तेकर बाद सूतल-बैसल प्रत्येक क्षण मे अहांक पंक्ति -- "हमरा स्मरण मे अहांक अनुदित कथा एखनो नहि आ ई हमर स्मरण केर सीमा भ' सकैत अछि।"              -- बेर-बेर घुरिआइत रहल, हमरा बेधैत-मथैत रहल, हमरा बेचैन कए देलक।हम सदा-
आनंदी लोग छी, तखनो बेधलक।छी त मनुष्ये।अपमान आ विश्वासघात सह ब कठिन होइ छै।मन मे ई चिंता सेहो अभरल जे जे कोय ओहि टिप्पणी-प्रतिटिप्पणी कें देखने हेता,तिनका मन मे ई भाव आएल हेतनि जे अरविन्द ठाकुर अपन नाम नै रहलाक चलते व्यथित छथि अथवा आनक नामसभक उल्लेख देखि डाह सं जरि रहल छथि।हम स्वयं कें एहन क्षुद्रता सं मुक्त मानै छी,तें लोकक भ्रम तोड़बा लेल ई पोस्ट करब आवश्यक बुझाएल।

ई अहांक स्मरणक सीमा नै, अपन स्मरण कें यत्नपूर्वक सीमा मे राखबाक चतुरता अछि।अलग बात जे कोय समुद्र अथवा पहाड़ कें अपन स्मरणक सी मा सं बाहर कए दिअए त तहि सं समूद्र अथवा पहाड़क अस्तित्व पर कोनो टा कनिओटा संकट आसन्न नै होइ छै।हं,संबद्ध स्मरणकर्ताक स्मरण-शक्ति आ ओकर मानसक उपचारक बेगरता दिस संकेत अवश्य करै छै।

अन्यथा ई केना संभव भेलै जे 'मानुस' कथा-

संग्रहक जे कथाकार 'बकलमखुद' मे --
".....अरविन्द ठाकुर जैसे कुछ गिने-
चुने से ही आत्मीय और करीबी होने का लाभ मिला....."--
लिखैत अछि,से 'अंतिका'क संपादकक रूप मे अरविन्द ठाकुरक प्रकाशित
-
प्रमाणित रचनात्मक योगदान कें अपन आत्ममुग्धता मे 'स्मरणक सीमा' सं बाहर कए दिअए?

'अंतिका' आ 'गौरीनाथ' लेल हमर स्नेह आ सतत पैरोकारी मैथिली मे हमरा खलनायक बनैने रहल,तखनो हमर आस्था नै डगमगाएल।(#विदेह द्वारा 2015 मे लेल हमर साक्षात्कारक एकटा अंश द्रष्टव्य) आस्था डगमगाएल त 'अंतिका' आ 'गौरीनाथ'हिक करतब सं।दुर्भाग्य !

अहि मामला कें बढ़ाएब ईहो कारण सं आवश्यक बुझाएल जे अहांक जिम्मेदारी-
विहीन उत्तर मात्र हमरा सं संबद्ध नै,अंतिका कें रचनात्मक योगदान देनिहार संपूर्ण रचनाकार समाजक अपमान, अवहेलना आ उपेक्षा सं जुड़ल अछि। किए त प्रकारान्तर सं अहां ई सेहो कहि रहल छिऐ जे 'लिस्ट' सं बारल ओ 'दर्जन सं बेसी नाम', ओहि लोकनिक तुलना मे जिनकरसभक नाम अहांक 'लिस्ट' मे छै, हेय आ दोयम दर्जाक छथि।

अहां अपन निजी रचना मे की लिखै छी, से अहांक मर्जी। किन्तु लेखकलोकनिक योगदानहि पर अस्तित्व ग्रहण करनिहार पत्रिकाक कोनो संपादक द्वारा लेखकक योगदान कें नकारब, अवमूल्यित करब (आ से ओकर जीवित रहितहि) अथवा 'स्मरणक सीमा' सं बाहर कए देब जेतबे अक्षम्य आ अनैतिक छै, तेतबे निन्दनीय आ अस्वीकार्य सेहो।

आ हं! सत्ता मात्र व्यक्ति, प्रतिष्ठान,गिरोह अथवा शासने टाक नै होइ छै, अ

वसरपरस्ती आ व्यावसायिकताक सेहो होइ छै आ अहांक प्रत्युत्तर देखलाक बाद हमरा आब शंका नै रहल जे "पत्थर तले दबी दूब उर्फ प्रवासी परिन्दे का हौसला" अजुका तारीख मे अहिसभ मे सं कोनो ने कोनो सत्ताक 'प्रतिबंध' मे हुअए, ने हुअए, ओकर दबाव मे अवश्य छै।

प्रमाणक रूप मे अंतिका मे छपल हमरा द्वारा अनुदित चारि टा कथाक प्रथम पृष्ठक फोटोसभ संलग्न अछि।हमर फाइलक अनुसार एक अथवा दू टा और अनूदित कथा अंतिका मे छपल हेबाक चाही।एकरासभक दर्शन करू आ अपन स्मरण कें नीक सं डांट-डपट करिऔ,लज्जित करिऔ जे ओ अहां कें एना सार्वजनिक मंच पर धोखा किए दए रहल ए।

Shri Dharam Raman Singh Raman Kumar Singh ,संयुक्त संपादक, अंतिका

87% 08:37

Gouri Nath

**Gouri Nath**

Arvind Thakur

'अंतिका'क आरम्भिक 25 अंकक इंडेक्स प्रकाश झा तैयार कयने छथि जे प्रकाशित अछि। ओहि इंडेक्स मे देखल आ अनुवाद केंद्रित पुस्तिका मुख्यतः देखल-- ओहि मे अहाँक कोनो अनुवाद नहि अछि। अंत केर उपलब्ध छओ-सात अंक मे सेहो नहि अभरल। बीच के किछु अंक हमरो लग नहि। हमरा स्मरण मे अहाँक अनूदित कथा एखनो नहि आ ई हमर स्मरण केर सीमा भ' सकैत अछि। ई तँ एक बात भेल। दोसर बात, हमर उद्देश्य एक-एक नाम उल्लेख करब नहि छल। लिस्ट तैयार करब तँ लगभग एक दर्जन सँ बेसी नाम एहन भेटत जिनक चर्च नहि भेल हैत। एहि लेल दुखी होइवला हेतु जेना हमरा लग कोनो जबाव नहि हैत तहिना एकरा पाछू यदि अहाँ कोनो सत्ताक "प्रतिबंध" अनुभव करै छी, तँ ओहि पर हँसले टा जा सकैत अछि।

13h Like Reply 1

**Arvind Thakur**

Gouri Nath

Comment as Arvind Thakur

उर्दू कथा

# कएक हजार साल नम्हर राति

रंजन सिंह

अनुवाद : अरविन्द ठाकुर

सुननिहार सभ ओकर गप बड़ ध्यान सँ सुनि रहल छलै, यद्यपि कि सुननिहार बूढ़बा सभ गोटेक बीच घोलटल सद्यः अलाय-बक्कछ गप छाँटि रहल छलै। ओहि गप सभ मे कतहु कोनो मिलानी नइँ रहय। गप करैत-करैत ओ स्वयं बहकि जाय, जेना डगर चलैत पथिक अपन रस्ता सँ भोतियाक' कोनो गलत पथ पर चल' लागय। एक टा गप केँ अधे छोड़ि ओ कोनो दोसर गपक छिप्पी पकड़ि लिअ'। एहिना राति बहुत धीरे-धीरे ससरैत रहै।

ओ सभ गोटे टीशन दिस जायबला बाजारक एक टा दोकानक बरंडा पर आबि राति कटैक लेल ओंघरा गेल छलै। कने कालक बाद, जखन ओकरा सभ मे सँ बूढ़ लोकक अपन कंठ खखसैत कोनो राजाक गप शुरू केलक तँ ओहि बरंडा पर ओंघरायल सभ गोटे हुँकारी भरय लागल।

"हुँ, फेर की भेलै, बाबा?"

बस तँ फेर की छलै। गप चलि निकलल...।

एक टा राजा छल। ओकरा सात गो रानी छलै।

सातो रानीक लेल राजा अलग-अलग महल बनबेलक। एक टा काठक, दोसर ईंट-मसल्लाक, तेसर संगमरमरक, चारिम ताम्बाक, पाँचम चानीक, छठम सोनाक आ सातम मे हीरा-जवाहर टाँकल रहै।

"एकदम ठीक!" केओ हामी भरलकै।

एतेक धन होइतो राजा केँ कोनो सखा-संतान नइँ छलै। तेँ ओ बड़ दुखी छल। राजा केँ अन्तत: केओ सलाह देलकै जे फलाँ जंगल मे एगो गाछ छै, ओइ पर सात गो फल लागल छै। जँ राजा ओइ फल सभ केँ तोड़िक' अपन रानी सभ केँ खिआबय तँ सभ केँ संतान भ' जेतै। मुदा संकट ई छलै जे ओइ गाछ लग पहुँचब बड़ मुश्किल छलै। रस्ता मे सात गो नदी पड़ैत रहै आ सात गो देव सँ मुकाबला कर' पड़ैत छलै आ गाछक चौतरफा सात टा



साँपक कड़गर पहरा छलै। मुदा राजा सेहो झोंकियल रहै आ ओ अपन सेना ल'क' चलि पड़ल।

गप एखन एतबे धरि पहुँचल रहै कि बुढ़बा केँ खोंखीक दौरा पड़लै। जखन ओकर दम सम्हरले तँ बुढ़बा बहकि गेलै। ओ एक टा दोसरे गप चला देलकै।

साबिकक गप छै। एक टा कारीगर एक टा एहन पेना लाठी बनेलक जकरा भीतर एगो आदमी पैसि सकैत छल। एहि तरहें ओ पेना मनुक्खे जकाँ बाजै छलै, चलै-बुलै छल आ खाइत-पीबैत छल।

"ठीक! ठीक!" प्राय: सभ मिलि हुँकारी भरलक।

फेर अकस्मात भेलै ई जे रिक्शा आ ताँगा सभक रेला अनघोल करैत सड़क पर सँ टप' लगलै। साइत टीशन पर कोनो पसिंजर गाड़ी रुकल छलै। तँ बुढ़बो कनेकाल थम्हल। फेर ओ एक टा माछक कथा शुरू क' देलकै, जे एतेक नम्हर छलै जे ओकर पीठ पर सौंसे एगो शहर बसल छलै, जाहि पर नइँ जानि कते मकान बनल छलै, कते रास खेत छलै। सागर मे जेम्हर ई माछ जाय ओम्हरे ई बसल-बसायल शहर चलि जाय।

"एकदम ठीक!" सभ हुँकारी भरलकै।

एहिना राति अत्यंत नहुँए-नहुँए ससरि रहल छलै। बुढ़बा गप देने जा रहल छलै आ ओ सब बड़ ध्यान सँ सुनि रहल छलै। फेर कोनो गप केँ अधे छोड़िक' बुढ़बा एक टा नव गप शुरू क' देलकै।

कय हजार साल पहिलुका गप छिऐ। एगो राजा अधा दुनिया केँ जीत लेलक।

"फेर!"

फेर अइ खुशी मे राजा बड़ी टा भोज देलकै।

"फेर! फेर!"

फेर की! एतेक व्यंजन बनायल गेलै जे राजाक शहरक सभ टा मकान मे खेनाइ बना-बनाक' राखल गेलै।

"फेर! फेर!" सभ गोटे एके संग हुँकारी भरि रहल छलै। बुढ़बा कहब शुरू केलकै।

सभ सँ पहिने राजा आ ओकर सर-समांग सभ खेलकै।

"ठीक!"

फेर राजाक हजारक हजार सैनिक आ चुनल नागरिक सभ खेलकै।

"ठीक!"

एतेक रास लोक सभ केँ खाइत-खाइत राति भ' गेलै।

"ठीक!"

आ सभक बाद रतुका बेर मे लाखक-लाख गरीब-गुरबा आ भिखारि सभ भरि-भरि पेट खेलकै।

"सद्यः फूसि! सरासरि फूसि!" ओहि बरंडा पर ओंघरायल सभ गोटे तामसे ठाढ़ भ' गेलै आ ओइ मे सँ एक गोटे बाजल, "हओ बूढ़बे, तोरा फूसिक गप करैत लाज नइँ होइ छह? जँ हम सभ गोटे राति केँ भरि पेट खेने रहितहुँ तँ एखन सुखक निन्न ने सूतल रहितहुँ। भरि राति तोहर ई बकथोथी के सुनतिअह?"

"हओ बाबू, किऐ खिसिआइ छह।" बुढ़बा कने डरल स्वर मे बाजल, "हमहूँ तोरे सब जकाँ भूखल छी। जँ हमरे निन्न अबैत रहितय तँ ई गप करैक लेल जागल रहितहुँ! हमहूँ...तँ सुति रहितहुँ।"

पंजाबी कथा

# हवा

गुरदेव सिंह रूपाणा
अनुवाद : अरविन्द ठाकुर

नेनाक कानबाक स्वर सुनि मदन चौंक गेल।

आकक पाछाँ छओ-सात मासक एक टा नेना मुँह भरें पड़ल कानि रहल छलै। कखनो ओकर मुँह धरती पर टिक जाइ। कखनो ओ माथ उपर उठा लिअय। कखनो ओकर कानबाक स्वर मद्धिम सुनाइ पड़ै, कखनो ऊँच।

मदन गाड़ी ठाढ़ क' देलक। नेना कें उठाक' अपन मुरेठाक छोर सँ ओकर मुँह पोछलक। फेर ओ थाह लगेलक—ओ छौंड़ा छलै कि छौंड़ी। ओ छौंड़ी निकलल। छौंड़ी ओकरा दिस टुकटुक ताक' लगलै।

लगे मे दूध सन उज्जर बुरका एना पड़ल छलै जेना अन्हड़ मे उड़िक' आयल होअय।

''केओ माय फेक क' भागि गेलै बेचारी कें।'' ओ सोचलक, ''केहन खराब हवा चलि पड़ल छै—माय सभ सँ नेनो नइँ सम्हारल होइ छै।'' ओ छौंड़ीक बाँहि खोलिक' अपन धेंटक चौतरफ लपेट लेलक।



सोझाँ छोट-सन खोपरी मे एक टा मरद पड़ल देखा देलकै। आगाँ बढ़िक' देखलक तँ ओ एक टा लहास छलै। माथ पर करिया रोशनाइ सँ गोदल चान आ तारा। चेहरा पर पीड़ाक डिडिर खिचल छलै जाहि सँ चान आ ताराक रूप बिगड़ि गेल छलै। पेट सँ अँतड़ीक लच्छा बाहर लटकि आयल छलै। टाँग लगक माटि लतमर्दन कयल सन रहै। प्राण बहराइत काल बेस छटपटायल हेतै।

''खुनीमा सभ बाप कें मारिक' फेक गेलै, माय कें उठाक' ल' गेलै—आ एहि छौंड़ी कें कानैत छोड़ि गेलै...'' जे ओकर अयबा सँ पहिने भेल छलै, तकर अनुमान लगबैत ओ बाजल।

छौंड़ीक मुँह अपन अब्बा सँ मिलैत रहै। तखनो उज्जर बुरका दिस तकैत ओकरा होइत रहै जे छौंड़ीक माय बड़ सुन्नरि हेतै। ओकर सौंदर्ये ओकर घरवलाक मुद्दै भ' गेल हेतै। ओ स्वयं तँ रसे-रस ककरो घर कें अपन घर कह' लगतै आ ककरो अपन घरबला। ओकरा आओर संतान भ' जेतै आ के जानय ओ एहि छौंड़ी कें बिसरियो जाइ। मुदा जँ ओ सभ मायक संग छौंड़ियो कें लेने जयतिएक तँ की हरज छल...?

''बेदरा भगवानक रूप होइत अछि—बेदराक सोझाँ मनुक्ख पाप कर' सँ डरैत अछि।'' मदन कें अपन मायक कहल ई गप मोन पड़ि गेलै।

''आ जे ओ सभ क' क' गेल अछि, से कोन पुण्य भेल?'' ओकरा मायक कहल गप्प फूसि बुझेलै।

छौंड़ी फेर कानय लगलै।

''दुर्गी सेहो बाजल करै छल, भगवान एक टा बेटी तँ हमरा दैतह, दुख-सुख बतिअयबाक लेल...लैह, भगवान ओकरा लेल बेटी पठाय देने छथि...अखन सँ की बूझत।... ने ई हिन्दू, ने मुसलमान। बिल्लूक संग खेलैत फिरत—दुनू बहिन भाइ...''

मदनक घरवाली दुर्गी कें तीन टा संतान भेल छल। तीनू आपरेशन सँ। दू टा मरि गेलै। बिल्लू बचि गेल छल। बिल्लूक जन्मेक काल डाक्टर कहि देने छलै जे जँ दुर्गी फेर गर्भवती भ' गेल तँ ओ बचत नइँ। आ दुर्गीक मोन मे बेटीक लालसा बाकीए रहि गेल छलै।

मराठी कथा

# भीजल इजोत

कुसुमावती देशपाण्डे
अनुवाद : अरविन्द ठाकुर

समाप्तप्राय मानसूनक पतरायल मेघ बाहर मे झिसिआइत रहय। मेहीं बुन्नक समूह, निपट असहायतावस्था मे लटकल सतभइयाँ तारा-समूह जकाँ, हवाक तोर पर बहैत भुइयाँ पर घोलटि रहल छलै, एकदम निस्तब्ध। चारि मास सँ झहरैत बरखाक प्रवाह थाकि गेल छलै, मुदा नियति द्वारा थोपल केँ ओ अनिच्छा सँ, बेमन सँ कयने चलि जाय रहल छल। शीतल-मंद हवा जे बहैत रहय, से जेना ओहि बहब केँ नकारैत बुझाइ: गाछक फूटैत हरियर पात सभ जेना ओकरा गुदानिते नइँ रहय। लागय जेना सभ टा सजीव वस्तु ठहिआयल आ उदासीनता सँ भरल होअय। चारूभर विराग पसरल रहय। मुदा की एहि विराग आकि जड़ता-विशेषक माध्यमे एक खास अपेक्षाक अतिसूक्ष्म अभिज्ञान अपना आप केँ अभिव्यक्त क' रहल छल?

कम सँ कम शांताक प्रकृति प्रेमी मोन केँ तँ एहने मन बुझेलै। चेत मे नइँ, मुदा जखन ओ खिड़की लग ठाढ़ि छलि, शून्य मे तकैत, एहने मन व्यग्र ध्वनि हल्लुके सँ ओकर मस्तिष्क मे गुँजलै। एक घंटी खाली छलै, ओ आने दिन जकाँ शिक्षिका कक्ष मे आयलि छलि आ खिड़कीकातक बाँहिवला कुर्सी मे मानि आए गेल छलि। ओ पछिला घंटी मे अपन इतिहासक पढ़ौनी आ लड़की सभ द्वारा ताबड़तोड़ प्रश्न सँ ओकरा घेरबाक प्रयास केँ बिसरि जयबाक जीतोड़ प्रयास कयलक। मुदा कक्षा मे जाहि निराशा केँ ओ आश्वस्तिदायक शाँतिक तर दाबि देने छलि, से कोठली मे ओकर एसगर बैसितहि उमड़ल चलि आयल। की ओ कहियो इतिहासक परवाहि कयने छलि? जखन ओ विद्यालय मे छलि तँ ओ एहि मे उत्तीर्ण-मात्र होयबाक भाँज क' लैत छलि। जहिना-जहिना ओकर वयस बढ़लै, गंभीरता सँ सोचैत, ओ मानव-गवेषणा लेल इतिहासक महत्त केँ बुझय लागल छलि विनित मुदा ओ कहियो एहि विषयक प्रति जीवन्त उत्कंठाक अनुभव नइँ कयलक। आ तेँ एकर मोजर नइँ जे ओ कतेक प्रयास कयलक, ओ कहियो एहि विषय पर ध्यान केन्द्रित करबा मे सक्षम नइँ भ' सकलि। ओहुना, जखन कखनो ई ओकरा पढ़ायल गेलै, दोसर तेसर कि चारिम क्रम सँ, अत्यन्त क्लान्त भाव सँ पढ़ायल गेलै। ओकर शिक्षक सभ तकर परवाहि नइँ कयने छलै। ओहो सभ एकरा घर पर रटि लैत छलि, थोपल-अढ़ायल जकाँ, आ तखन कक्षा मे एकरा दोहरा दैत छलि। प्रायः ओकरो सभ केँ ई ओहिना पढ़ायल गेल छलै आ प्रायः तेँ ओहो सभ ओहिना पढ़बैत छलि... तेँ की एक पीढ़ीक कयल पाप अबैत पीढ़ी सभक माथ पर बिसाइत गेलै?



किछु दिन धरि ओ इतिहास सम्बन्धी एहि जटिलता सँ लड़ल छलि। के छलीह ओ ग्रीक सभक इतिहासक सरस्वती? क्यो छलीह ने? कोना केओ ओकरा तुष्ट क' सकैत छल? ओ प्रसन्न होयबाक कोनो आभास नइँ देने छलीह, ने ओ ओकरा त्राण देतीह। आ एखन हुनके संग तारतम्य बनला पर शांताक शैक्षणिक कीर्ति निर्भर भेल अछि। कीर्ति की कखनो कीर्तिक छाँहो धरि ओकर बाट केँ छुलकै? इतिहासक पढ़ौनी पर ओकर जीवन निर्भर छलै। ओहि मे ओकर प्रगति पर ओकर जीविकाक निरन्तरता निर्भर रहय। ओकर जीवन...

की छलै ओकर जीवन?...खिन्नता सँ शांता उठलि आ खिड़की लग ठाढ़ भ' गेलि। अलक्षित भेल ओकर विचारक झिस्सी बरखाक झिस्सी मे मिझराय गेल। ओकर क्लान्ति बरखाक क्लांतिक संग एकमएक भ' गेलै—बाहरी संसार आ भीतरी संसार पर निपट उदासीनता व्यापि गेलै। शांता अपन दृष्टि केँ दूर धरि जाय देलकै। हरियरीक विराट पसार। ओहि सँ फराक ठाम-कुठाम पानि जमा भ' गेल छलै। किछु महींस पोखरि मे खेलौड़ क' रहल छलै। कखनो ओ सभ अपन मूड़ी उपर दिस फेकय, जेना बरखाक फुलझड़ीक मजा लैत होअय आ कखनो विनीत भावेँ ठाढ़ भ' पागुर कर' लगैत छलि। की ओकरा सभ केँ किछुओ परवाहि छै? की कोनो वस्तु ओकरा सभ केँ पीड़ाए सकैत अछि? ...केहन वैरागी जीव अछि ओ सभ? एक टा मुस्कीक किरिन शांताक चेहरा पर छिड़िआब' लागल छलै। ओकर मोन गतिमान भेलै। इतिहासक फंदा सँ बाहर गतिमान भेलै बरखाक संगीत मे विलीन भेलै, लगलै, महींस सभक संग, जीवंत होअय, अंततः एक टा क्षीण उदासीनताक संग। तेँ की, प्रायः एहि जड़ता सँ एक टा उमीद बहरेलै?

घुरती मानसून शीतकाल मे प्रवेश करैछ। भादवक मेघाच्छादित अकास शुद्ध आश्विनी नीलवर्ण मे रूपान्तरित भ' जाइछ। मानसूनक श्लथ, क्लान्त आ आर्द्र हवा सँ प्रारंभिक शरद ऋतुक स्वच्छ, तीव्र आ कनकन हवा अभरि अबैछ। क्षण-विशेषक उदासीक बीया मे ई

# मायक करेजा

**वू ले माई**
अनुवाद : **अरविंद ठाकुर**

लाई सकपक मे पड़ल छलि। अपन धर्मपुत्र कें देखि अयबाक अनुमति ओ एखन लेनहि छलि कि ग्राम जन मिलिशियाक ओकर सभ साथी एहि बात कें जानि गेल छल। ओ सभ ओकरा चारू दिस सँ घेरि क' बैस गेल छलै, मारिते रास प्रश्न पूछय लागल छलै आ उपहार सभ सँ लादि देने छलै। प्राय: सभ गोटे बेदराक लेल किछु ने किछु देब' चाहैत छलै। एक गोटे अपन हिस्साक डिब्बाबला दूध देलकै, "बेदरा कें एकर बेसी बेगरता होइ छै, हमरा लेल तँ मोटके अनाज यथेष्ट।" केओ जरलहा रॉकेट सँ उतारल पैराशूटक कपड़ा देलकै, "मौसम खराब होबय जा रहल छै, ई ओकरा अढ़ लेल उपयोगी हेतै।"

ओकरा नइँ बुझाइत छलै जे अपन साथी सभक प्रश्नक ओ की उत्तर दिअय। ओ मात्र मुसुकायलि। अपन अकबकी कें नुकाबय लेल ओ हाँइ-हाँइ उपहार मे प्राप्त वस्तु सभ कें समेटि सरियाक' झोरा मे राखय लागल। फेर ओ ऑटोमैटिक (राइफल) सम्हारलक, अपन संगी सभ सँ विदा लेलक, हाँइ सँ संचार-खाधि मे कूदल आ ओहि गाम दिस चलि पड़ल जतय ओकर धर्मपुत्र कें राखल गेल छलै।

ओकरा समक्ष पसरल ग्रामीण अंचल वास्तव मे सुन्न मसान भ' गेल छलै। प्रांतीय सीमाक विभाजन रेखा सँ उत्तर दिसका जमीन बी-52 बमवर्षक सभक अनधुन बमवर्षाक चलतबे एक टा विशाल चालनि मे बदलि गेल छलै। आब ने डगर रहै, ने गाम रहै आ ने हरियरी। एकपेरिया आ झाड़-झखाड़ सेहो निपत्ता रहै। चारूदिस कीपाकार खदहा सभ मे पड़ल माटि जरिक' धूरा-गर्दा भ' गेल रहै आ खून जकाँ लाल देखाइ दैत रहै। एतय-ओतय धुआँक बादल देखाइ दै, जे टटका बम-विस्फोट आ आगिलग्गीक सूचक रहय।

कतहु केओ मनुख नइँ देखाइत छलै। बहुत पहिनहि जीवनक सभ रूप भुँइलोट भ' गेल छलै। आब लोक दुश्मनक जहाज आ हवाइ-विध्वंसक कें मारि गिरयबाक लेल



अपन रहबास सँ नइँ बहिराय, ने खेत मे काज करय, ने फसिल काटै छलै। दिनुका बखत युद्धक पृष्ठ भाग दिसक एहि यात्राक बहुत पहिने सँ लाई एहि खतराक सही अंदाज लगाक' राखने छलि। किंतु ओकर करेजा मे उठयबला मातृजन्य भावना ओहि सँ बेसी प्रबल छलै। अपन धर्मपुत्र ओकरा बड़ मोन पड़ै। ओकरा बचयबाक लेल ई अपन जिनगी जोखिम मे डालि देने छलि। कोनो अठारह वर्षक युवती जेकर एखन धरि कोनो टा ब्वाय-फ्रेंडो नइँ बनल छलै, से अपन शील पर नियंत्रण रखैत सभक सोझाँ बेदरा कें स्तन सँ लगाए लैत छलि। की तखन ओकरा अपना कें बेदराक माय मानबाक अधिकार नइँ छलै?

ओकर हथियारबंद साथी सभ सेहो एहिना मान दैत रहै। जहिया कहियो ओ ओकरा सँ भेट क' के आबय, सभ दिस सँ प्रश्नक तोर लागि जाइ आ प्रत्येक डेराक लोक कें ओकरा ई बतब' पड़ै कि ओकर बेटा कोना किलकारी मारै छै, तोतराबै छै आ कोना ठुमकि-ठुमकिक' बुलै छै। एक बेर जखन ओकरा सँ बोलाए गेलै जे ओ एनमेन ओकरे सन देखा दै छै, तँ ओकर साथी सभ कें देर तक ठठ्ठा करबाक अवसरि भेट गेलै, "अचरज छै, तोंही ओकरा जनमेने छहक? तखन तँ ओ तोहर काँख तर सँ जनमल हेतह!"

ई सभ किछु मॉप-अप ऑपरेशन (बचल-खुचल दुश्मनक सफायाक कार्रवाई)क बेर मे भेल छलै, जकरा अमरीकी 'असैन्यीकृत भूखण्डक दक्षिणी हिस्साक सफाइ' कहैत छल। उत्तर पर आक्रमण करबाक नेयार मे ओ सभ एना कयने छल। भोरे-भोर बुलडोजर आ अमरीकी सशस्त्र सैनिक सभ उतारल गेल छल, लगपासक सभ ग्रामीण सभ कें हेलीकोप्टर मे ठूसिक' आनठाम ल' जायल गेल छल। मकान, खेत आ बाड़ी सभ कें मटियामेट क' देल गेल छल। प्रतिरोध करयबला सभ कें गोली सँ भूजि देल गेल छल।

किंतु तखनो मारिते रास लोक सभ गामक उत्तर दिस भागय मे सफल भ' गेल। बैन हाइ नदी लग एकत्र भ' ओ सभ जेना-तेना नदी पार करय लागल, किछु नाह मे, किछु बहैत कूड़ाक ढेरीक उपर बैसिक' आ किछु हेलिक'। एहि निष्क्रमण कें रोकबाक लेल अमरीकी सभ ने मात्र सैन्य टुकड़ीए तैनात कयलक, सातम बेड़ाक हवाइ जहाज आ मैकनमारा रेखाक संग ठाढ़ तोपखाना कें सेहो काज मे भिड़ाए देलक। अकस्मात मशीनगन सभ चल' लागल, साँय-साँय गोली बरस' लागल आ बम फूट' लागल। शरणार्थी सभ आगिक धधरा आ बमक बौछार सँ घेरा गेल, बहुत गोटे तँ ओहि क्षण कालक गाल मे समाय गेल।

लाई, जे उत्तरी तट पर ड्यूटी पर तैनात छलि, तत्क्षण सभ कें चेतओलक। "अमरीकी सभ अपना सभक लोक कें मारने जाय रहल अछि।", ओ जोर सँ चिकरलि, "चलै, चलह, ओकरा सभ कें बचाबी।"

संक्षिप्त आदेश देल गेलै, "शरणार्थी सभ कें पाछाँ लाबह, अपन-अपन चौकी पर तैनात रहह, गोली बरसाबह।"

मशीनगन आ विमाननाशक अड्डा कें उघार छोड़ि देल गेलै जे बम, रॉकेट आ गोली ओकरे पर बरसै। भारी गोलीबारी कयल गेलै, जाहि सँ सैनिकगण शरणार्थी सभक लग पहुँचि ओकर सभक मदति क' सकै।

मैं नदी किनारेवाला भुतहा पीपल की तरह झंझावात सहते खड़ा रहा। लोग अपने-अपने ढंग से आरोप और लाँछन लगाते सदमे पहुँचाते रहे।

बहरहाल, जैसे भी, मैं साहित्य में आ गया था और वह भी दिल-दिमाग से होल-टाइमर बनकर। यह दीगर बात कि सहरसा-सुपौल के बड़े साहित्यिक-समुदाय में महाप्रकाश, रामचैतन्य धीरज, अरविन्द ठाकुर जैसे कुछ गिने-चुने से ही



आत्मीय और करीबी होने का लाभ मिला, लेकिन देश के बड़े परिदृश्य से लगाव बढ़ने लगा था। कमलेश्वर, कुलानन्द मिश्र, कर्मेन्दु शिशिर जैसे अग्रजों ने आरम्भिक दौर में मुझे सँवारने और मार्गदर्शन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। एक तरह से उन्होंने मुझे चलना सिखाया।...

चलते-चलते एम.ए. में कुछ समय के लिए दरभंगा भी गया। वहाँ की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि कई समान सोच के युवा साथी मिले। एक नया परिवार मिला, जहाँ सब एक-दूसरे के अन्तरंग थे। खूब लड़ते-झगड़ते थे। पहले *शिखा* फिर *समय-सन्दर्भ* यहीं प्रकाश में आया। कमांडर थे उस परिवार के मुखिया गजलकार नरेन्द्र। साथी सारंग कुमार, संजीव स्नेही आदि। फाकामस्ती में भी तोपमुकाबिल थे हम! पर अफसोस कि छोटी जगह और बड़ी समस्या थी!...

धीरे-धीरे पलायन शुरू हुआ। सबसे अन्त में नरेन्द्रजी पटना गये हैं। बाकी साथी दिल्ली आ गये हैं क्रमशः। कुछ और डाल से ऐसे चिड़िये आये--कवि रमण कुमार सिंह, कथाकार श्रीधरम। मेरा जो यह सहरसा-दरभंगा होते दिल्ली तक का सफर है, आम निम्नमध्यवर्गीय युवाओं जैसा ही है। अन्तर है तो यही कि वहाँ से चलते वक्त मेरी जेब में पैसे डालनेवाला या हौसलाअफजाई करनेवाला गाँव के सिवान तक कोई नहीं मिला।

लग छाती हेतए, छातीमे दम हेतए तेकरे सन्तति (रचना) दीर्घायु हेतए। साहित्य सहितक भाव अछि। एहि सहितसँ रहित कोनो स्वार्थ वा नकार भाव सुपात्रक अहित करैत अछि आ तेँ ई कतहु बनओ, अस्वीकार्य अछि। साहित्यक पावन क्षेत्रमे कोनो अपावन विचार या क्रियाक कोनो स्थान नहि हएबाक चाही।

**'अंतिका' आब मृतप्राय पत्रिका अछि मुदा ओकर हरेक अंकमे अधिकांशतः सहरसाबला लेखक रहैत अछि। ई कतेक उचित ?**

ई प्रश्न हमरा कनेक विरोधाभाषी लागैत अछि। जखनि अंक बहराए रहल छै त ई मृतप्राय केना भेल ? ई अवश्य जे ई नियमित नहि रहि सकल अछि। तखनि मैथिलीमे एहन अभागल कोनो पहिल पत्रिका त नहि अछि अंतिका। रहल बात एहिमे अधिकांशतः सहरसाबला लेखकक छपब त हम एकरा एहि दृष्टिसँ नहि देखि पाबि रहल छी। हम सुपौलक छी आ अंतिकामे हमरहु रचना छपैत रहल अछि आ मधुबनीअहु-दरभंगा आ अन्य ठामक लेखकसभक रचना हम एहिमे देखैत-पढ़ैत रहल छी। गौरीनाथ पहिनेक तुलनामे बहुत बदललाह अछि—व्यक्ति, साहित्यकार आ सम्पादकक रूपमे, जे समय-काल, परिस्थिति आ माहौलक प्रभावमे स्वाभाविक अछि किन्तु हुनक संघर्ष, क्षमता, योग्यता आदिकेँ नकारब कठिन अछि। अपन अनेक सीमाक बादो गौरीनाथ/अनलकान्त मठ-मठाधीशक प्रति विद्रोह आ आक्रोशक स्वरकेँ अक्षूण्ण राखने रहल छथि आ अपन लेखन आ अंतिकाक माध्यमसँ ओ एकरा निरन्तर प्रकट करैत रहल छथि। ई विद्रोह आ आक्रोशक स्वर अलग-अलग लोकक लेल प्रिय-अप्रिय भए सकैत अछि किन्तु एकरा नहि सकारब कठिन अछि।

क्षेपकमे एकटा गप कहबाक मन होइए। से ई जे सुपौल-सहरसा आ दरभंगा-मधुबनीमे प्रकृतिगत अंतर अछि। एकटा कोशी नदीक उद्दाम तेवरक क्रीड़ाक्षेत्र आ दोसर कमलाक लचगर खेलौरक क्षेत्र अछि। कोशी संघर्ष आ पुरुषार्थ सिखबैत अछि त कमला कोमल सुविधाक पाठ दैत अछि। संभव अछि जे अनलकान्त/गौरीनाथकेँ कोशीक लेखन बेसी धरगर आ समकालीन बुझाबैत होइनि।

**बहुत दिनधरि मैथिलीमे दलित लेखक केर प्रवेश नै छल। एकरा अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐ ? एखनुक केहन अवस्था छै ?**

साहित्यकेँ दलित-लेखन, स्त्री-लेखन आदिक कूड़ीमे बाँटिकए देखब हमरा कनेक

## १.२.अंक ४०२ पर टिप्पणी

**रबीन्द्र नारायण मिश्र**

एहि बेरक विदेहक संपादकीय पढ़लहुं।अपनेक कथन स्पष्ट,अद्भुत आ प्रशंसनीय अछि।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## गद्य

# २.१.परमानन्द लाल कर्ण-पुरुषोत्तम मासक एकादशीक माहात्य



## প্বরুষোত্ত্ম মাসক একাদশীক মাহাত্ম্যে
## ( পদ্ম প্বরাণ উঁত্তর খণ্ড )

ঋধিষ্ঠিব কহলনি - ভগরন্ ! আর হম শ্রীরিষ্ণুক ব্রত মে উঁত্ত্ম ব্রত, জে সর পাপ কেঁ নষ্ট কহ দৈত থছি আ ব্রতী নোকনি কেঁ মনোৱাঞ্ছিত ফন দৈত থছি , সে স্বনহ চাহৈত ছী । জনার্দন ! প্বরুষোত্ত্ম মাসক একাদশীক কথা কহু জে ওকব কী ফন থছি আ কোন দেরতাক পূজন কএন জাযত থছি ? প্রভো ! কোন দানক কী প্বণ্য হোযত থছি ? নোকনি কেঁ কী কবহক চাহি ? তখন কোনা স্নান কএন জাযত থছি ? কোন মঁত্রক জপ কএন জাযত থছি ? প্বরুষোত্ত্ম ! প্বরুষোত্ত্ম মাস মে কোন অন্নক ভোজন উঁত্ত্ম হোযত থছি ?

ভগৱান্ শ্রীৱিষ্ণু কহলনি - ৰাজন ! অধিক মাস এনা পৰ জে একাদশী হোযত অছি , ও কমনা নাম সঁ ৱিখ্যাত অছি । ও তিথি মে উঁত্তম তিথি অছি ।এহি ব্রতক প্রভাৱ সঁ নক্ষ্মী অন্বগ্ন হোযত ছথিন । ওহি দিন ব্র্বহ্ম মুহূর্ত মে উঁঠি ভগৱান্ পুৰুষোত্তমক স্মৰণ আ ৱিধি ৱিধান সঁ নহায সোনায কহ ব্রতী নোকনি ব্রত কৰথি । ঘৰ পৰ জপ কেনা সঁ এক গুনা , নদিক কছেৰ পৰ দূ গুনা গোশীনা মে সৌ গুনা , অগ্নিহোত্র মে এক হজাৰ গুনা , শিৱক ক্ষেত্র মে , তীর্থ মে , দেৱতা নগ আ তনসী নগ এক নাখ গুনা ৱ ভগৱান্ ৱিষ্ণু নগ অনন্ত গুনা ফন ভেঁটৈ ত অছি ।

অৱন্তিপুৰ মে শিৱশর্মা নাম সঁ একটা শ্রেষ্ঠ ব্রাঁভন ৰহৈত ছনাহ , হ্মনকা পাঁচ টা ব্রাঁনক ছনৈন। ওহি মে সঁ জে সৱসঁ ছোট ছনথি ও পাপাচাৰি ভহ গেনথি , তেঁ হ্মনকৰ ব্রাঁৰুজী আ সগা সম্বন্ধি হ্মনকা ত্যাগি দেনথিন । অপন নীচ কর্মক কাৰণ নির্বাসিত ভহ সুদূৰ ৱন মে চনি গেনাহ । দৈৱযোগ সঁ এক দিন ও তীর্থৰাজ প্রযাগ পহুঁচি গেনাহ । তখন ৰহনা পৰ ও

ত্রিরেণী মে স্নান কেনথি ঋা কোনো ম্বনিক ঋাশ্রম খোজঽ নাগনৈথ । খোজৈত খোজৈত হবিমিত্র ম্বনিক ঋাশ্রম দেখনথিন । প্বরুষোত্তম মাস মে ওহি ঠাম কতেকো নোকনি ছনাহ । ক্ষনকা ঋাশ্রম মে পাপনাশক কথারাচকক ম্বখাবরিন্দ সঁ কমনা একাসশীক মহিমা স্বননথি , জে প্বণ্যমযী, ভোগ ঋা মোক্ষ প্রদাত্রী ঋছি । জযশৰ্মা রিধি রিধান সঁ কমনা একাদশীক কথা স্বনি ম্বনিক ঋাশ্রম মে সর নোকনিকক সঁগ ব্রত কেননি । ঋধবতিযা মে ভগরতী নক্ষ্মী ক্ষনকা নগ ঋারি কহননি - ব্র্বহ্মণ ! কমনা একাদশী ব্রতক প্রভার সঁ হম ঋহাঁ পব খুশী ছী ঋা দেরাধিদের শ্রী হবিক ঋাজ্ঞা সঁ হম রৈকুণ্ঠধাম সঁ এনহুঁ ঋছি । ঋহাঁ রব মাঁগু ।

ব্র্বাহ্মণ কহননি - হে মাতা নক্ষ্মী ! জোঁ ঋহাঁ হমবা পব খুশী ছী , তহন কোনো এহন ব্রত কথা রতাউ জাহি মে সাধু সন্ত নোকনি সদি খন নাগন বহৈত ছথি ।

নঞ্চমী জী কহলনি - র্ঁবাহ্ম দের ! একাদশী ব্রতক মাহাম্যে স্বননা সঁ সর দ্বঃখক নাশ হোযত অছি আ প্বণ্যক প্রাপ্তি হোযত অছি , তেঁ এহি ব্রতক মাহাম্যেযক শ্ররণ করহক চাহি । জেনা মাস মে প্বরুষোত্তম মাস , পক্ষি মে গরুড আ নদি মে গংগা শ্রেষ্ঠ অছি, তহিনা তিথি মে দ্বাদশী তিথি উঁত্তম অছি । জোঁ দিন মে একাদশী আ দ্বাদশী হোয আ বাতি মে ত্রযোদশী  ভহ জায আ ত্রযোদশী মে পাবণ কএন জায তহন স্নানকা সএ যজ্ঞক ফন মিনৈত অছি । জে কেও শ্বদ্ধ ভার সঁ প্বণ্যময একাদশীক ব্রত করৈত ছথি , ও প্বনবারৃত্তি সঁ ম্বক্ত ভহ রৈকুণ্ঠধাম জাযত ছথি ।

ভগরান্ শ্রীকৃষ্ণ কহলনি - বাজন্ ! ঙা কহি দেরী নঞ্চমী ওহি র্ঁবাহ্মণ কেঁ রব দহ অন্তর্ধান ভহ গেলীহ । র্ঁবাহ্মণ সেহো ধনরান ভহ অপন পিতাজীক ঘব আরি গেলাহ । জে কেও কমনা একাদশীক ব্রত করৈত ছথি আ একাদশীক দিন একব মাহাম্যে স্বনৈত ছথি ও সর পাপ সঁ ম্বক্ত ভহ জাযত ছথি ।

যধিষ্ঠিব কেঁ প্বছনা পব ভগরান্ শ্রীগ্রঞ্চ কহননি- বাজন্ ! প্বরুষোত্তম মাসক দোসব পঞ্চক একাদশী কামদা নাম সঁ রিখ্যাত খ্বছি । জে কেও শ্রদ্ধাভার সঁ কামদাক শ্বভ ব্রতক খন্বষ্ঠান কবৈত ছথি ,ও এহি নোক খা পবনোক মে মনোরাঞ্ছিত ফন পারৈত ছথি । কামদা একাদশীক ব্রত কহ বাতি মে জাগবণ কবৈত খ্বছি , ও সর পাপ সঁ ম্বঞ ভ হ পবম গতি পারৈত ছথি । এহি মাহাম্যে কেঁ পঠনা খা স্বননা সঁ সহস্র গোদানক ফন মিনৈত খ্বছি ।

******

নাম - পবমানন্দ নান কর্ণ ,রাঁরুঁজীক নাম- স্ব০ পবশ্বোম নান কর্ণ ,মাযক নাম - স্ব০ উঁষা দেরী, গাম - ঘোঘসব, পো০- রিবৌন , জিনা দবভঁগা ,সিঞ্চা -স্নাতকোত্তব, সেরানিরৃত্ত,প্ররঁধক, সেঁন্ট্রন রেঁক খাফ ভঁডিযা ভা মেন পতা-karnpnl@gmail.com. মোরাঁজন নঁরঁব 7677179516.

(पाठक वृंदक सलाह पर उक्त कथाक देवनागरी लिप्यांतरण प्रस्तुत अछि )

## पुरुषोत्तम मासक एकादशीक माहात्म्य

( पद्म पुराण उत्तर खंड )

युधिष्ठिर कहलनि - भगवन ! आव हम श्री विष्णुजीक व्रत मे उत्तम व्रत, जे सव पाप कें नष्ट कs दैत अछि, व्रती लोकनि कें मनोवांछित फल दैत अछि , से सुनs चाहैत छी । जनार्दन ! पुरुषोत्तम मासक एकादशीक कथा कहु जे ओकर की फल अछि आ कोन देवताक पूजन कएल जायत अछि ? प्रभो ! कोन दानक की पुण्य होयत अछि ? लोकनि कें की करs चाही ? तखन कोना स्नान कएल जायत अछि ? कोन मंत्रक जप कएल जायत अछि ? पुरुषोत्तम !

पुरुषोत्तम मास में कोन अन्नक भोजन उत्तम होयत अछि ?

भगवान श्री विष्णु कहलनि - राजन ! अधिक मास एला पर जे एकादशी होयत अछि , ओ कमला नाम सँ विख्यात अछि । ओ तिथि मे उत्तम तिथि अछि । एहि व्रतक प्रभाव सँ लक्ष्मी अनुकूल होयत छथिन । ओहि दिन ब्रह्म मुहूर्त मे उठि भगवान पुरुषोत्तमक स्मरण आ विधि विधान सँ नहाय सोनाय कऽ व्रती लोकनि व्रत करथि । घर पर जप केला सँ एक गुना , नदीक कछेर पर दु गुना , गौशाला पर सए गुना अग्निहोत्र पर एक हज़ार गुना ,शिवक क्षेत्र पर, तीर्थ स्थल पर आ तुलसी लग एक लाख गुना व भगवान विष्णु लग अन्नत गुना फल भेंटेत अछि ।

अवंतिपुर मे शिव शर्मा नाम सँ एकटा श्रेष्ठ बाभन रहैत छलाह , हुनका पाँच टा बालक छलेंन, ओहि मे सँ जे सवसँ छोट छलैथि ओ पापाचारी भऽ गेलथि , तैं हुनकर बाबूजी आ

सगा संबंधी हुनका त्यागि देलथिन । अपन नीच कर्मक कारण निर्वासित भs सुदूर वन मे चलि गेलाह । दैव योग सँ एक दिन ओ तीर्थराज प्रयाग पहुँचि गेलाह । भूखल रहला पर ओ त्रिवेणी मे नहाय सोनाय कें कोनो मुनिक आश्रम खोजs लागलैथि। खोजैति खोजैति हरिमित्र मुनिक आश्रम देखलथिन । पुरुषोत्तम मास मे ओहि ठाम कतेको लोकनि छलाह । हुनका आश्रम मे पापनाशक कथावाचकक मुखारविंद सँ कमला एकादशीक महिमा सुनलथि , जे पुण्यमयी ,भोग आ मोक्ष प्रदात्री अछि । जयशर्मा सेहो विधि विधान सँ कमला एकादशीक कथा सुनि मुनिक आश्रम मे सव लोकनिकक संग व्रत केलनि । अधरतिया मे भगवती लक्ष्मी हुनका लग आवि कहलनि - ब्रह्मण ! कमला एकादशी व्रतक प्रभाव सँ हम अहाँ पर खुश छी आ देवाधिदेव श्री हरिक आज्ञा सँ हम वैकुंठ धाम सँ एलहूँ अछि अहाँ वर माँगु ।

ब्राह्मण कहलनि - हे माता लक्ष्मी ! जौं अहाँ हमरा पर खुश छी , तहन कोनो एहन व्रत कथा

वताउ जाहि मे साधु लोकनि सदिखन लागल रहैत छथि।

लक्ष्मीजी कहलनि - ब्रह्मण देव ! एकादशी व्रतक माहात्म्य सुनला सँ सव दुःखक नाश होयत अछि आ पुण्यक प्राप्ति होयत अछि , तैं एहि व्रतक माहात्म्यक श्रवण कर'क चाही । जेना मास मे पुरुषोत्तम मास , पक्षी मे गरुड़ आ नदी मे गंगा श्रेष्ठ अछि तहिना तिथि मे द्वादशी तिथि उत्तम अछि । जौं दिन मे एकादशी आ द्वादशी होय आ राति मे त्रयोदशी भs जाय आ त्रयोदशी मे पारण कएल जाय , तहन हुनका सए यज्ञक फल मिलैत अछि । जे केओ शुद्ध भाव सँ पुण्यमय एकादशीक व्रत करैत छथि , ओ पुनरावृत्ति सँ मुक्त भs वैकुंठधाम जायत छथि ।

भगवान श्रीकृष्ण कहलनि - ई कहि देवी लक्ष्मी ओहि ब्राह्मण कें वर दs अंतर्ध्यान भs गेलीह । ब्राह्मण सेहो धनवान भs अपन पिताजीक घर चलि गेलाह । जे केओ कमला एकादशीक व्रत करैत छथि आ एकादशी दिन

एकर माहात्म्य सुनैत छथि ,ओ सव पाप सँ मुक्त भs जायत छथि ।

युधिष्ठिर कें पूछला पर भगवान श्रीकृष्ण कहलनि - राजन ! पुरुषोत्तम मासक दोसर पक्षक एकादशी कामदा नाम सँ विख्यात अछि । जे केओ श्रद्धा भाव सँ कामदा एकादशी शुभ व्रतक अनुष्ठान करैत छथि , ओ एहि लोक आ परलोक मे मनोवांछित फल पावैत छथि । कामदा एकादशीक व्रत कs राति मे जागरण करैत अछि, ओ सव पाप सँ मुक्त भs परम गति पावैत छथि । एहि माहात्म्य कें पढला आ सुनला सँ सहस्त्र गोदनाक फल मिलैत अछि ।

******

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

## २.२.आचार्य रामानंद मंडल-मिथिला-मैथिली:असमंजस स्थिति



**आचार्य रामानंद मंडल**

**मिथिला-मैथिली: असमंजस स्थिति**

पहिले मिथिला। मिथिला राज्य निर्माणी असमंजस मे हय। कोनो प्राकृतिक मिथिला राज्य निर्माण के विचार मे हय।वो भारतीय आ नेपाली मिथिला के बात करैत हतन।अइ के लेल अतीत मे डा लक्ष्मण झा आ अन्य पाया तोड़ो आंदोलन कैलन।त कोई जेना अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद के संरक्षक डा धनाकर ठाकुर उत्तर बंगाल आ झारखंड के कुछ भाग मिला के मिथिला राज्य निर्माण के विचार रखैत हतन।परंच दुनु विचार सामयिक न हय। भारत आ नेपाल स्थित मिथिला के एक्कीरण के लेल सुगौली संधि के रद्द करे के होतैय जे अंग्रेज़ आ नेपाल सरकार के बीच भेल हय।इ एगो अंतरराष्ट्रीय मामला हय।अइ पर नेपाल कहियो सहमत न होयत आ एगो नया विवाद खड़ा हो जायत।

दोसर बंगाल के उत्तर भाग आ झारखंड के कुछ भाग, दो राज्य के मामला बनत।वो राज्य कैला सहमत होयत।

राज्य पुनर्गठन के मामला केंद्राधीन होइ छैय परंच प्रस्ताव के राज्य विधान मंडल से पारित होनाइ आवश्यक होइ छैय। एकटा स्थिति इ होइ छैय कि राज्य मे राष्ट्रपति शासन होइ।अइ स्थिति मे संसद राज्य पुनर्गठन विधेयक के पारित कर सकैय छै।परंच राष्ट्रपति शासन लागू करनाइ टेढ़ी खीर हय।

अइ स्थिति मे उतर बिहार के मिथिला राज्य निर्माण के मांग उचित होयत। कारण कि वर्तमान बिहार सरकार प्रशासनिक रूप से बिहार के उत्तर बिहार आ दक्षिण बिहार मे बांट देलय हय। यथा -उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक आ दक्षिण बिहार ग्रामीण बैंक। उत्तर बिहार विद्युत प्राधिकरण आ दक्षिण बिहार विद्युत प्राधिकरण। केन्द्रीय सरकार दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय गया के निर्माण कैले हय।अइ स्थिति में केंद्र सरकार आ बिहार सरकार से जायज मांग कैल जा सकैय हय। उत्तर बिहार के सासंद आ विधान मंडल सदस्य सरकार पर दबाव बना सकैय हय।अइ प्रकार उत्तर बिहार के मिथिला राज्य बना के मिथिला राज्य के सपना पूरा भ सकैय हय।

आबि मैथिली। प्राकृतिक मैथिली खंड खंड मे बंटल हय। जेना केन्द्रीय वा मानक मैथिली, पच्छमी मैथिली वा बज्जिका दच्छिणी मैथिली वा अंगिका। कोनो साहित्यकार पच्छमी मैथिली के गिरल मैथिली वा बोली कहैत हतन त कोनो दच्छिणी मैथिली के छिका छिकी कहि के अपमानित करैत हतन। सरकार बज्जिका आ अंगिका के अलग-अलग करे पर तुलल हय त मानक मैथिली साहित्यकार भंगिआयल हय।सभ कालिदास के चेला बनल हतन।पाग -दुपट्टा के खेल खेलैत छतन। हुनका मैथिली के विकास आ संवर्द्धन से कोनो मतलब न हय।वो अभियो मैथिली महासभा के पारित प्रस्ताव के मिथिला के कानून बुझैत हतन। आबि हमरा सभ के समेकित

मैथिली बनाबे के पड़त। मैथिली के भिन्न-भिन्न रूप केन्द्रीय मैथिली, पच्छमी मैथिली आ दच्छिणी मैथिली के मान साहित्य में स्थान देबे के पड़त। असमंजस से उबरू।

आउ मिथिला -मैथिली के विकास आ सम्बर्द्धन के लेल मिलजुल कर डेग बढ़ाउ।

जय मिथिला!जय मैथिली!

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## २.३.मुन्ना जी-बीचला लोक (कथा)




**मुन्ना जी**

**बीचला लोक (कथा)**

वाह!आइ त' जतरा सुफांटि निकलल! तीन दिन सं बौआ-टौआ कें खाली हाथ घर घुरि जाइ! लगैए आइ परोपट्टाक मए सब चिलका जन्म देनाइ बन्न क' देलकैए! अपन अन्न पानि खा कते दिन निमहब? पहिने जाहि गली, मोहल्ला मे पएर दी घोघतनिया बाली सब सेहो कहि दिए-"फल्लां गाम बाली के बेटा भेलैए! "जाउ ने धनगर आ समंगर दुनू छै! खोंइछा, झोरा-झपटा सब भरि देत! धिया पुता सेहो पछोड़ लागि सुना दिए -" ओकरा घर मे बेटा एलैए, चलू ओकरे दुरा पर जमघट जमतै! "यै मइयां आब जनी जाति के चिलका नै होइ छै?

धौर हेतै किए नै, ऐ तोर मे सबटा छौंड़ीए भफएल छलै!

बेटा सुनिते,हिजड़बा-हिजड़नीक झुण्ड ढोल, हरमुनिया ल' ढूकि जाइ ओही अंगना! रहै त' सबटा हिजड़नीये साया, साड़ी आ ब्लौज पहिरने! कियो कियो सलवार समीज मे आ ओढ़नी ओढ़ने! ओही मे सं कियो कियो जिन्स,

टीशर्ट पहिरने, बाबरी छंटेने हिजड़बा भ' जए! आ बांकी सबटा जनी जातिक भेष मे छाती बढ़ेने ऐन मेन मौगीए बुझू! सांच मे त' इ सब ने स्त्री ने पुरूष, बीचला लोक, भगवानक डांग देल! मुदा समाज मे रहै बसै लए कपड़ा लत्ता आ बोल सं पानिगर! देहगर आ दुधगर सेहो! पएरक घुंघरू सं लोकक मोन हरिया दान, धान आ पाइ ल' घर घुरए !

मिथिला मे बेटाक जन्म पर लोकक मोन हर्षित केनाइ पमरियाक काज छल! इ इस्लाम धर्म माननिहार ' पमार' जातिक एकटा वर्ग पेशाक रूप मे अपना लेने छल! इ सब झुण्ड बना गामे गामे पता करैत रहैत छल -' कोन घर बेटा जन्म लेलक! "एकरो रेवाज मे आने पौराणिक रेवाज सन कान्या बारल रहै छलै! कोनो घर कान्या जन्मक खबरि पाबि ओ घर बागि चलए. जखन की एकर पुरूष झुण्ड मोन बहटारै लए किछु सदस्य कें घघरी पहिरा स्त्री वेश मे नचबैए माने राज नर्तकी सं लोक नर्तकी धरि, पेशा मे सेहो स्त्री के नचएब समाज कें बेसी पसिन्न.मिथिला मे लौण्डा नाचक प्रथा नै रहलैए.कबुला पाती मे छठिक घाट पर आंचर पर नटुआ नचएब होइ कि विवाह दान छकरबाजी नाच करतै पुरूष आ स्वांंग स्त्रीक.आ ताहि समाज मे बेटी जन्म पर ओकरा मनहुस बुझत.गर्भहि जांच लग सं ओकर प्रताड़ना सं समाज एकभगाह सन भेल जाइछ.एक दिस बेटी जन्म पर बान्ह आ दोसर दिस जीवनक संपूर्णता आ कि मोन बहटारबाक प्रमुख साधन बेटीये, स्त्री.यांत्रिक विकासें परम्पराक होइत पतन सं सामाजिक सरोकार सेहो भारल सन. आकि लोक विकासक गति नव नव रूचि मे परिवर्तित भ' रहल. हिजड़ा नाच सेहो तहि रूचिक संकेत थिक.आ आब हिजड़ा समाज सेहो तेजी सं विकसित भ' रहल.

हय... हय तूं सब आङन मे कत' घूसल अबै छें?

बाबा ,तमसाइ किए छी? की भेल अहां कें धीरज धरू ने.हम सब कोनो मुजरा बाली नै जे मोन आ देहक मनोरंजन क' ढ़ेका,जेबी ढ़ील क' घर घुरा देब.

हय तों त' बताह जकां गप्प करै छें, हमरा की लालबत्ती बला बस्तीक गांहकि बुझै छें जे एना लोढ़िएने जाइ छें?

नै यौ बाबा, हम सब अहांक सनक देखि कें चौल करै छलौं.हम सब कि कोनो कोठा बाली छी जे इमान, देह, धरम सब बेचि क' पेट भरब.
हम सब अहीं सब सन माय बापक, इश्वरक डांग सं डेंगएल चिलका थिक. से इश्वरक गलती की हमर सबहक कर्तव्य दोष, नै जानि.एकहि कोखिक कियो सोझ कियो टेढ़ के त' परिवार, समाज राखिए लै छै. मुदा ओही कोखिक बीचला लोक माने नै बेटी ने बेटा के लोक मोन मारि बहटारि दैए.आ तहन हम सब मए बाप, सर समाजक निंहुछल एकटा नव समाजक अंग होइ छी.आ ओही तिरस्कृत समाजक हंसी ठठ्ठा मे समिलात भ' जीवन गुदस्त करैत रहै छी.

छी त' हमहुँ सब मनुक्खे, सकलि सुरति , देह गात सं अहीं सन एकरंगाहे. मुदा प्रकृति प्रदत्त जे सृजनधर्मिता तकरा सं वंचित.समाजक लेल अशपृश्य त' नै मुदा कुड़कुट सन. सेहो अयोग्यता त' प्रकृतियेक देल. कोनो बलात् व्यवहृत वस्तु जात त' नै ने हम सब. तहन बाबा एना हिज्जो किए ?

ऐ हिजड़ा जातिक एत' कोन खगता ?.हमरा घर त' पोती आयल, पोता नै ने! तहन कथीक हंसी खुशी. जो तों सब आन दुआरि,आन टोल, गाम. ताकुत कर गे नवजात बेटा आ घरन्दार घर. तों किन्नरवा सब हमरा बखसि दे,नेहोरा करै छीयौ. तों सब नाच गान कर तोहर सएह काज ने! जो धन

संपति अरज पेट पोस!

बाबा, हम सब किन्नर नै, हिजड़ा छी, हिजड़ा. मुदा किन्नर जातिक गुण सेहो अंगेजने छी, पेट पोस' लेल. किन्नर त' सृष्टिक आदिये काल सं छल, वनवासीक रूप मे. जाहि मे नर नारी दुनू फराक छल. जे स्वर्ग लोक मे नर्तक नर्तकी ( नचनिया) रूप मे उपस्थित रहै छल. रामायण- महाभारत सब काल मे नचनिया निमित्त रहल. मुदा हिजड़ा प्रकृतिए सतएल एहेन जीवात्मा ऐछ जे ने नर छल आ ने नारी.कालान्तर मे लेखक सब किन्नर आ हिजड़ा के ओहिना मिझ्झर क' देलक जेना सबटा वनस्पति घी भेल डालडा आ सबटा वाशिंग पाउडर सर्फ कहए लागल.पौराणिक ग्रन्थ ज्योतिष शास्त्र फरिछौने ऐछ जे "- कोनो स्त्री मे चन्द्रमा, मंगल आ सूर्यक लग्ने गर्भधारण होइछ.शारीरिक संबंध मे वीर्यक अधिकाधिक उपस्थिति सं बेटा, रक्तक अधिकाधिक सं बेटी आ दुनूक समान उपस्थिति सं नपुंसक वा हिजड़ा चिलका जन्म लैछ.ओना विज्ञान तकरा नै मानैए.विज्ञानक अनुसार गर्भधारणक विकासक क्रम अवरुद्ध भेला सं मिलावटी जननांग (intersex) के संभावना बनैछ.एकर कारण मे संबंधक अनियमितता, दवाइ सेवनक उनटा प्रभाव, क्रोमोजोम मे एक्स- वाइक जग्गह एकाकी उपस्थिति आदि होइछ. बाबा, एकटा बात गिरह बान्हि लियय जे जन्मक समय सब बच्चा हिजड़ा नै रहैछ.सिरखारी सं सब पुरूषे सन रहैछ, मुदा अविकसीत जननांग रहैछ, टेस्टोरेनक अभाव सं छाती त' विकसीत होइछ मुदा अविकसीत लिंग उपस्थित रहैछ. करीब अस्सी प्रतिशत एहेन चिलका सर्जरीक पछाति कोनो एक रुप पबैछ. किछु सफल ऑपरेशन सं पूर्णत: पुरूष वा पूर्णत; स्त्री काय मे सेहो नवजीवन पौलक.

हय ,सुन ! हम कोनो स्कूलक कक्षा मे नै बैसल छी. तों तहन सं इतिहास, भूगोल, विज्ञान पढ़ने जा रहलें. तोहर सबहक इश्वरक डांग सं समाजिक आ

मानसिक स्थिति दारूण छौ से बुझै छी. मुदा आब की अंग्रेजी शासकक सत्ता थोड़े छै जे तोरा सबकें उभयलिंगी दर्जा आ अधिकार छीनि कें नक्सली की अपराधीक श्रेणी मे द' देने छलै. तोहर एतेक भाषण सं जिज्ञासा भेल जे तों नाच गान मे मगन रहै बाली इ विशिष्ट ज्ञानी कोना भेलें?
बाबा! हम पूरे हाइ स्कूल पढ़ने छी, आ अपन हंजेड़क मेट छी.अपन आ समूह सदस्यक अधिकार आ ज्ञान प्राप्तिक वास्ते स्कूल, कॉलेज, कचहरी आ मंत्रालयक चक्कर कटैत रहै छी....! समाचार चैनलक पैनल सदस्य छी!

बाबाक जिज्ञासा शान्ति पछाति ओकर खून मे नव उर्जा प्रवाहित भेलै,आंशिक चमक बढ़िया गेलै.हलसैत बाजि उठल-" हं बाबा हं, अहूं के जेना हमर सबहक जिनगीक दुख दर्दक खिस्सा बुझले ऐछ! आब कहू जे हम सब सबहक सुख- दुख मे सहयोगीये , मुदा शायद अंग्रेजबा सब रहै उनटा खोपड़ीक . जहन अवसान अबै छै तहन अहंकार बढ़ै छै आ बुद्धि घटै छै. तें ने 1871 मे इ सब एकभगाह कानून पास क' हमरा सब कें अपराधिक जनजाति " जरायम "के श्रेणी मे द' देने छल. बुझू ओ सब हमर सोन चिड़ै सन भारत के कामधेनु गए बुझि दुहि दुहि खए, से भेल मालिक.जहन की हम सब मांगि चांगि खाइ. फेरो हंसाब' खेलाब' जाइ से भेलौं ओकरा नजरि मे अपराधी. धनि कहू सुभाष, खुदीराम आ गांधी बाबा ....सब कें जे ओइ कलमुहां सब सं देश के आजादी दियौलनि.तहन 1951 मे अपन सरकार हमरा सब कें से हो ' जरायम ' सं आजाद करा समाज मे रहि नाच- गान क' पेट भरि जीवाक अवसर देलक.

समाजक ओलवा दोलवा सं कहियो हम सब खिन्न नै होइ छी. जे समाज अपन संगतुरिया के नै बखसैए से हमर सबहक कोना हएत? हम सब त' प्रकृतिए बारल सन. बाबा एकटा बात ध्यान राखब, बरू हम सब बारले सही

मुदा असमाजिक नै. देहक भूख बरू नै जगौ मुदा पेटक भूख त' लगबे करै छै. ताहि लए त' नाच गाने क' हम सब अहां सबहक नजरि मे रहै छी. अहींक समाज जकां हमरो समाज मे जहन संख्या वृद्धि होइत गेलै तहन कते लोक बधइये मांगितै? सुनने हेबै जे खगता आविष्कारक जननी होइछ.त' हमहूं सब गुरूक आदेशे बस, ट्रेन, रेडलाइट पर थपड़ी पारि अर्थक जुटान मे जुटि जाइ छी.

आम समाज सं बरू बारले मुदा हमर कतिएल बेरएल लोकक सेहो एकटा संगठित समाज त' ऐछिए. समाज की? इएह ने जे एक फरीकक,एक जीव वर्गक सामुदायिक जिनगी जीवाक समूह.त' हमहूं सब की एकरवा थोड़े रहै छी. जेना अहांक समाज जाति, धर्म, वर्ग मे बांटल मुखिया, सरपंच, माञ्जिन्जन शासन त'र निमहैए तहिना हमहूं सब अपन देवीक समूह मे बांट बखरा भ' सामूहिक जिनगी जीवै छी यै ने यौ.हमर समूह चारि वर्ग मे संगठित ऐछ! सब वर्गक अपन अपन देवी छथिन.
पहिल बुचरा,ऐ वर्ग मे कने पिताह, पुरूषाह आ उग्र सदस्यक प्रवेश रहैछ.इ देवी सेहो काली माय जकां उग्र त' ओ ऐ समूहक शांति भंग नै होम' देथिन, इएह लोक मान्यता छैक.
दोसर नीलिमा, इ संयमित, संतुलित जीवन जीयय वाली देवीक समूह ऐछ.!ऐ मे स्त्रैण सदस्य सबहक प्रवेश देल जाइछ. जे राब दुआब नै, अपना कें दाबि राख' वाली सदस्य होइथ.तेसर समूह जाहि देवीक होइछ ओ कहबैछ मनसा, जाहि मे एहेन सदस्य कें राखल जाइछ जे जीवन सं अगुताइथ नै, अपन जीवन मे किछु नव करबाक आतुर होइथ.आ चारिम समूह होइछ हंसा देवीक.ऐ मे हुनकर प्रवेश होइछ जे सदस्य उडांत होइथ. जिनकर पोन, मोन आ जीह एक ठाम टिक कें नै रहि पाबए.एक समूहक सदस्य कें दोसर समूहक सदस्य सं कोनो राग द्वेष नै रहैछ.मुदा जे जाहि समूह वर्गक सदस्य तकर नियमक बन्हन मे बान्धल सन बुझू.अहीं सबहक

पंचायतक मुखिया जकां हमरो समूहक प्रमुख नायक कहबैछ.सब समूहक नायक मिलि जुलि एकटा गुरूक चयन करैछ.हमर समाजक कियो सदस्य प्रतिभाशाली, बलशाली, मेधावी कि उजड्डु हो, गुरूक अपमान नै करैछ.हम सब खोपड़ी खपा कि थोपड़ी बजा जे धन अर्जित करै छियै ने बाबा ओ सबटा गुरूक चरण मे अर्पित क' दै छियै. से करियौ किए ने, उएह हमर सबहक पालक आ उएह अभिभावक.

ऐ फाल्गुन शुक्लपक्ष मे वार्षिकोत्सव ऐछ, ऐ अवसर पर सब समूहक सदस्य एक निर्धारित जगह पर उपस्थित होइछ.सब अपन लहंगा- चुनरी, जेवर सं सुसज्जित, सजि धजि , दुल्हिन बनि आयल ऐछ. गुरूक आदेशानुसार इ पर्व विवाह अनुष्ठानक पर्व थिक.ऐ दिन सबहक सामुहिक विवाहक स्वांग रचाओल जाइछ.सबहक एकहिटा वर होइत छथि ' अरवण'. गाम, शहर सं बहरी जग्गह, सुनसान सन, अरवण देवताक प्रतिमा लगाओल गेल ऐछ! शमियाना मे लाइट आ डी. जे सं चकमक आ गनगन करैत दृश्य!
सब हिजड़ा गण पतियानी बना, धुप दीप जरा ' अरवण' देवताक अराधना मे बैसि गेल. नायक द्वारा पूजन, हवनक संग सबहक सिनूरदानक रेवाज पूर्ण भेल.आब सब नाच गान करैत हर्षोल्लास मे रमि गेल ऐछ! इ त्योहार सांझ सं भोर धरिक होइछ. भोरूकवा मे गुरूक आज्ञा होइते ' अरवण' देवताक मूर्ति तोड़ि फोड़ि नष्ट क' देल जाइछ. तहि संग सब वधुगण अपन अपन चुड़ी फोइर,सेनुर मेटा, मंगल सूत्र तोड़ि वैधव्य धारण क' लैछ.रंग विरंगा साड़ी, ब्लाउजक जग्गह उजरा साड़ीक परिधान मे आबि जाइछ. मुदा विलापक प्रथा नै छै. कींवदन्ति ऐछ जे- महाभारत काल मे हिजड़ा गण वनवासी छल. ओइ ठाम एकरा सब कें राक्षसक उत्पात भेलै.जकरा सं संघर्ष क' अर्जुन पुत्र ' अरवण' आजाद करौलनि. तें इ सब रक्षक बुझि अपन पति स्वीकार क' लेलक.मुदा अरवण,युद्धभूमि मे लड़ैत ओही दिन

मृत्यु गति के प्राप्ति क' लेलनि.ओइ दिन सं इ, एकदिना पावनि मनेवाक रेवाज आइ धरि निरन्तरता बनौने ऐछ!

आइ सबहक जुटान एकठाम भेल ऐछ, पूरा चुप्पी मुदा मोन अशान्त सन! शान्तिक मृत्यु सं सब मोने मोन खुश भेल ऐछ,जए दहि एकरा त' मोक्ष हेतै.गै बिन्दा,ओना थोड़े पैट हेतौ चप्पल, जुत्ता ला ने.आ सब मिलि लहाश कें चप्पल, जुत्ता सं पीटैत कहैए- जो... जो गै फेर एम्हर नै अबिहें, जनमिहें त' मनुक्ख भ' कें! गै किरणिया तों किए नोर बहबै छें,पोछ! नै त' इ फेरो एम्हरे घुरि औतौ.पुन: शान्ति पसरि गेल ऐछ!अधरतिये मे लहाश कें खेत मे आनल गेल. हिन्दु धर्म मानितो लहास जरएब असगुन बुझल जाइछ. कियो बहरी बला लोकक दर्शन सं एकरा मोक्ष नै भेटतै तें चुपचाप खाधि मे द' झांपि चल. मना जे अगिला जन्म मे मनुक्ख होउ, नर- नारी किछो मुदा बीचला लोक नै.
आइ चारू भर खुशीक च'प उनार गप्प पसरल छै.सब हिजड़ाक करेजा सुप सन भेल बुझू.ओना निर्णय समाजक हो कि न्यायालयक सार्थके बुझू.इ निश्तुकि बुझू जे सब निर्णय सब पर लागू नै होइछ.आ कि एना कहू जे सब बात सं सब लाभान्वित नहि होइछ. मुदा तै सं कि आइ 15 अप्रैल 14 हमर सबहक जीवनक इतिहास स्वर्णक्षार सं लिखल सन! किए त' अझुके दिन सर्वोच्च न्यायालय हमरा सब कें पिछड़ी जातिक श्रेणीक बराबर आरक्षणक घोषणा कएलक! आब पढ़ल लिखल कें नोकरी मे जग्गह सुनिश्चित सन. ओना पहिनहियो सं हमर लोक सब शिक्षक, प्रोफेसर, पार्षद आदि त' भेले छै.मुदा आब अधिकार संग हेतै.हं अधिकारक बात पर मोन पड़ैए वर्ष-94. जहिया हम सब टी.एन. शेषण कें नाचि गाबि मोन बहटारने रही.उएह त' पहिल बेर हमरा सब कें विधिवत मताधिकार प्रयोगक अधिकार दियौलनि.ओइ सं पहिने हमरा सब कें मतदानक ने कोनो अधिकार छल आ ने कोनो सरोकार.आब.. आब हमहूं सब सरकार भ' सकै छी आ हमरो

सबहक सरकार बनि सकैए जेना एखनहु धरि अहां सबहक ऐछ! बाबा ओंघाइ छीयै की?
ढ़ोल, हरमुनिया आ हाथ माइक नेने साड़ी ,समीज बालीक हंजेड़ अनचोके बुचकुन कक्काक आंगन में ढूकि गेल।

कनिञां घोघ तनैत,बुच्ची सम्हारैत,नुकबैत कोठरी ध' लेलनि।काकी छाती पिटैत-रौ दैब रौ दैब पोता- पोता रटलौं त' एलीह भगवती। तै पर सं हिजड़ाक झुण्ड।।

क्षणहि मे सगरो टोल दलमलित!स्त्री गणक हेंज अंगना सं दुरा धरि सोहरि गेल छल।पमरियाक जग्गह हिजड़ा देखि उत्सुकता दुन्ना।फरमाइस क' के गीत सुनै गेल।
नाच-गानक बीच कक्का काकी के एक हजार थम्हबैत लियय किछु कपड़ा लत्ता जोड़ि विदा करू।
यै मां इ लौथ एक हजार आओर मिला द' देथुन।

गै मए गै मए,जेना बेटा जनमल होइ!
मां,बेटा- बेटी नै,मए हेबाक सुख हर्षित केलक!

हिजड़बाक मुखिया आओर पांच सए लगा घुरबैतकहलक-"मइयां,हे इ आशीष।
" बेटीये से ने बेटा,बेटी सम्हारू त' जग चलतै।"

**-मुन्ना जीक साहित्यिक यात्रा कथा लेखनसं प्रारम्भ भेल छल. पहिल कथा "मनियाडर" झंझारपुरक कथा गोष्ठी (1993) मे पाठक संग। पहिल प्रकाशनार्थ कथा "स्वीकार" कर्णामृत (1994), दोसर प्रदीप**

**बिहारीक संपादन मे सझिया संगोर "भरि राति भोर� मे (१९९७)। तकर अतिरिक्त विदेह, मिथिलांगन....मे. ओइ बीच बीहनि कथा विधा फरिछाब' मे लागल आब ओ पाटि धऽ लेलक तखन पुनः कथा दिस.... क्रमशः । अपन तेरहम आ हिजड़ा जीवन पर लिखल टटका कथा!**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

## २.४.संतोष कुमार राय 'बटोही'-घरक चौकैठ (कथा)



**संतोष कुमार राय 'बटोही'**

**घरक चौकैठ (कथा)**

ई नीक कहल जा सकैए या खराब से तँ बादक गप छियैय, परञ्च जनानी केँ घरक दहलीज नांघक चाही ? ई एकटा प्रश्न अछि। हम अई प्रश्नक उत्तर खोजि रहल छी। गप ई छियै जे हमरा ससुराल सँ एकटा बारह-तेरह सालक बचिया जे हमरा सैर लगतीह मायक डर सँ घर सँ बाध दिस भगलीह। हुनकर माय हुनका पीछा सेहो छलीह। ओ भागैत भागैत नहर पार करैत छपराढी कुँआढ दिस आबि गेलीह। हुनकर माय देखलकिहिन जे ओ नहर पार क गेलीह तँ ओ ई भरोस पर पीछा करनै छोडि देलथिन्ह जे घर वापिस आबि जेतीह मनिषा। सांझ भ गेल छल। अनहार सेहो भ गेलै। मनिषा घर वापिस नहि भेलीह। ओ छपराढी मे कतौ भरि राति रैह गेलीह। रविवारक दिवस छेलैक। हम छुट्टी पर छलहुँ। सोमवार केँ इस्कूल गेलहुँ। हमरा किछु नहि जानकारी छल जे ओ छपराढी मे छथि। डेरा पर एलाह बाद रुणा कहलीह जे मनीषा केँ देखलियै ।

हम उत्तर देलियै नहि।

आब ओ सभटा खिस्सा कहअ लगलीह। सोमवार केँ हुनकर माय दुल्लीपट्टी, शीलानाथ, कुँआढ सेलीबेली, ट्रेनिंग चौक नरार, नरार कोठी चौक, महुआ आदि जगह मनीषा केँ खोजि लेलथिन्ह। मनीषा कतौ नज़र नहि पडलीह। छपराढी मे जत ओ राति मे रुकल छलीह। ओई घरक आदमी कहलकैन्ह ओकरा ट्रेनिंग चौक पर छोडि ऐलीयै। बस मे ओकरा बैठा

देलियै। ओ कहलक जे कलुआही जायब। रुणा कैँ माय बारंबार फोन करअ लगलीह जे मनीषा तोरा लग छौ। ओकरा बुझल छै जे जीजा छपराढी मे माहटर छथि। मंगलवार कैँ हम सी एल मे छलहुँ । आब ई मामला जनानी ए तक नहि रहलै। मर्द कैँ सेहो कहल गेलै। मुन्नीदेव सिंह आओर हुनकर भा ई सेहो अइ मामला मे शामिल भेलाह अछि। जयनगर थाना मे सिन्हा लिखौल गेल आओर सभ तरि खोजने शुरु भेल। बिरौल, खजौली, कलुआही , बरदेपुर, फेर सँ छपराढी, कुँआर, शिलानाथ, दुल्लीपट्टी, सेलीब्रेट, ट्रेनिंग चौक नरार, कोठी चौक नरार, महुआ, हरियाली, गोराई, जयनगर, लक्ष्मीनगर, राजनगर, मधुबनी। परञ्च मनीषा कैँ कतौ खोजखबर नहि।

माय कैँ आओर परिवारक लोकनि, अरोसिया परोसिया, समाज , गामक लोकनि कैँ की हालत होयतै से तँ कहल नहि जा सकैए। लडकी की घर सँ निकलला कैँ बाद कतेक सुरक्षित रहैत छै से तँ हम अहाँ जानते छी। ओही दिन सँ हमरा ठीक सँ निम्न नहि भेल । बुधवार कैँ हम इस्कूल गेलहुँ विद्यार्थी सभ सँ पुछलियै, शिक्षक सभ कैँ बीच मनीषा लक गप केलियै।परञ्च कतौ कुनो खबर नहि।

पता लागल जे घर सँ भागलाह सँ पहिने मनीषा जहर सेहो खाने छलीह। अस्पताल मे बड रुपया खर्चा भेलै ओकरा बचाबै मे। ओ बैच गेलीह। ओही सँ पहिने हुनकर बहिनक बियाहक कर्जा सभ हेबे करै। आब प्रश्न ई उठैत छै जे बारह तेरह बरखक बचाय माहुर क्या खेने रहै। ओ किया फिरिशान भेल रही। कोरहिया हॉल्ट पर कतेक लोकनि किनको टेंशन भेला पर ट्रेन सँ कटि कैँ मरि जायत अछि। ई घटना कोरहिया मे होयत रहैत छै। ककरो कंठ दबा कैँ मारि दैत छै, ककरो आगि लगा क मारि दैत छै। लफंगा छौरा सभ गुमती पर भांग गाजा, दारू पीबि क मोटर सा इकिल सँ स्टंट करैत रहैत छै। किछु छौरा छिना झपटा सेहो करैत अछि। देसी कटा सेहो रखैत अछि। नेपाल सँ

दारु सप्लाई होयत छै। शिक्षा कैँ स्तर निम्न छै। पारिवारिक बनावट ठीक नहि छै। छोरा छोटी वाला कांड होयते रहैत छै। किछु छौरा कतेक बेर जेल जाक आबि गेल अछि।

मनीषा दिमागी रूप सँ सही नहि कहल जा सकै ए किया तँ ओ यदि सही रहतीह तँ घरक दहलीज सँ बाहर नहि भगतीह। मायक डर सँ लोक घर सँ थोडे भागि जायत छै। रुचि गेल , मायक मारि-गारि आशीर्वाद होयत छै। जनानी लेल घर सँ बाहर सुरक्षा नहि छै। बाहर नोचि क खाय वाला सभ बैसल छै। ई तँ हुनकर माय बालक धर्म बुझियौ जे ओ मधुबनी सँ सही सलामत बरामद भ गेलीह। ट्रेनिंग चौक पर जै बस मे चढल रहै संयोग जे एकटा नीक जनानी भेंट भ गेलीह मनीषा कैँ। बारह तेरह बरखक असगरे लडकी के देखि क जनानी बुझि गेलीह जे ओ घर सँ निकले गेल छै। ओ अपना संगे समस्तीपुर ओकरा नेने गेलीह। ओ तँ पटना जेबाक गप क रहल छलीह, परञ्च ओ जनानी बलजोरी ओकरा अपने संग ल गेलीह। फेर नीरा सँ मधुबनी नेने एलीट मनीषा कैँ। घरक लोकक फिरिशान समझिए के ओ मनीषा सँ घरक फोन नंबर लेलीह। ओ जनानी फोन पर मनीषा कैँ माय कैँ सभ गप कहलथिन्ह। मनीषा सँ सेहो गप करा देलथिन्ह। मनीषा घर आबि गेलीह।

**-संतोष कुमार राय 'बटोही' , ग्राम - मंगरौना, पोस्ट - गोनौली, भाया - अंधराठाढ़ी, जिला - मधुबनी, बिहार-८४७४०१ मोबाईल नं० 6204644978; सम्प्रति - शिक्षक।**

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.५.संतोष कुमार राय 'बटोही'-पार्वती केर शपथ (धारावाहिक नाटक)



**संतोष कुमार राय 'बटोही'**
**पार्वती केर शपथ (धारावाहिक नाटक)**

(नेपथ्य मे पार्वती , महादेव, नंदी, नारद, भक्त, भक्तिन, एकटा छोट बालक आओर बालिका, आओर समाज छथि। मंच सजाउल गेल छै। मंच कैँ दृश्य कैलाश पर्वत माफिक छै।)

**पहिल दृश्य**

( महादेव आओर पार्वती अपन-अपन आसन पर बैसल छथि।नंदी केर प्रवेश।)

नन्दी : तीनू लोकक स्वामी महादेव आओर माता पार्वती कैँ सेवक नन्दी कैँ तरफ सँ साष्टांग प्रणाम !
(नंदी माटि मे छाती कैँ बल सुति रहैत छथि आओर दुनू हाथ जोरि कऽ महादेव आओर माता पार्वती दिस बढ़ा दैत छथि। )

महादेव आओर पार्वती (एके संगे आशीर्वाद कैँ मुद्रा मे हाथ बढ़ाबैत) : जुग-जुग जीवअ पुत नन्दी।

महादेव : देश-दुनिया कैँ की हाल छै पुत्र नन्दी ?

नन्दी : पृथ्वी पर अपराध बढ़ि गेल अछि। जनानी कैँ ऊपर जुल्म बेसी बढ़ि गेल अछि। बलात्कार घटना बढ़ि गेल अछि। गोली कांड बढ़ि गेल अछि। बात- बात मे नवयुवक सभ बंदूक-पिस्तौल निकालि लैत अछि। प्रेम प्रसंग मे हत्या बढ़ि गेल छै।

पार्वती : सोशल मीडिया दुआरे हत्या आओर आत्महत्या सेहो बेसी भऽ रहल अछि।

महादेव : हँ, देवी ! सोशल मीडिया कैँ दुआरे अपराध बढ़ि गेल छै। बंगाल मे डाक्टर कैँ संग घटना घटि गेलै। घोर अपराध !!!

( नारद केर प्रवेश)

नारद : महादेव आओर माय पार्वती केर जय। स्वामी भूलोक मे अनर्थ भऽ रहल छै। जनानी कैँ पाछा मर्द निधो कऽ पड़ल छै। माय पार्वती एकर निदान केल जाउ , नहि तँ अनर्थ भऽ जेतै।

पार्वती : हे नारद ! एकर निदान तँ महादेव करताह। जखन रावण, भस्मासुर, कंस, हिरण्याक्ष, हरणकशिपु वगैरह कैँ महादेवजी, ब्रह्माजी, विष्णुजी मिलि कऽ नष्ट केलाथि ।

महादेव : देवी ! एकर निदान हेतै । धीरज राखु।

पार्वती : आब कतेक धीरज राखी महादेव ! जखन मर्द सभ नंग्टे घर सँ निकलतै तखन अहाँ किछु करबै ? जनानी केर दुर्दशा देखि कऽ हम कारुणिक भऽ रहल छी।

नारद : महादेव ! माय पार्वती केर गप्प सुनल जाउ ।

महादेव : पापी कैँ पापकर्मक निदान हेतै। पापक घैला भरअ दियौ देवी ! बालिका केर हत्या कखनहु उचित नहि कहल जेतै।

नारद : महादेव देर भऽ रहल अछि। हम घुमि-घुमि कऽ देखि रहल छियैय बैजनाथ धामक नगरी देवघर अछि । आओर बिहार प्रदेश मे बाबा रहलाक बादो जनानी कैँ लेल कोनहु सुरक्षा नहि छै।

पार्वती : महादेव इ गप्प ठीक नहि कहल जायत ।अहाँ धेयान नहि दैत छियैय। अगर आबो धेयान नहि देबै तँ हम खुदे ब्रह्माजी आओर देवी सरस्वती सँ ऐ विषय पर गप्प करअ लेल ब्रह्मलोक जायब ।

( पार्वती आसन पर सँ उठि कऽ ब्रह्मलोक विदा भेलीह । नारद जी सेहो विदा भेलाह। कैलाश पर्वत पर सिर्फ महादेव आओर नन्दी रैह गेलाह।)

नारद : जय माय पार्वती की।( इ कहैत नारद विदा भेलाह अपन बाबूजीक ब्रह्मलोक।)

(पर्दा गिर गेल आओर पहिल दृश्य केर अवसान) भेल।)

**-संतोष कुमार राय 'बटोही' , ग्राम - मंगरौना, पोस्ट - गोनौली, भाया - अंधराठाढ़ी, जिला - मधुबनी, बिहार-८४७४०१ मोबाईल नं० 6204644978; सम्प्रति - शिक्षक।**

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.प्रणव झा-डिप्लोमा इन फार्मेसी एग्जिट एग्जामिनेशन नियमन, २०२२



**प्रणव झा**

## डिप्लोमा इन फार्मेसी एग्जिट एग्जामिनेशन नियमन, २०२२

वर्तमान विश्व के परिप्रेक्ष्य मे देखल जाय त फार्मास्युटिकल्स एकटा विस्तृत आ बहुआयामी स्कोप बला कारोबार आ रोजगार के क्षेत्र छैक। नाना प्रकार के दवाई, टीका आदि के शोध, रिसर्च, मेनुफ़ेक्चरिंग, मार्केटिंग आ वितरण एकटा पैघ इकोसिस्टम छैक । एकर सबसे छोट इकाई छैक केमिस्ट & ड्रगीस्ट  अर्थात दवाई के दोनाक चलेनहार। अपना देश आ राज्यक नियमानुसार ई दवाई दोकान चलेनिहार सभ के न्यूनतम डी.फार्म अर्थात फार्मेसी मे डिप्लोमा के योग्यता राखनाई आनिवार्य छैक। मुदा बहुतो लोक बिना ऐ पात्रता के सेहो अनका डिग्री बऽले आ नै त ड्रग इंस्पेक्टर से सेटिंग कऽ के दवाई दोकान चला रहल छैथ।

एकटा आन समस्या ऐ क्षेत्र मे जे पिछला दु-एक दशक मे बढ़ल अछि ओ अछि गोबरछत्ता जेकाँ फुजल फार्मा कॉलेज सब जै मे पढ़ाई लिखाई साढ़े बाईस भऽ रहल छैक। खाली पाई बऽले एडमिशन आ डिग्री बांटल जा रहल छैक। किएकि दवाई सुइया आ मेडिकल ईक्विपमेंट एकटा संवेदनशील वस्तु थीक आ एकर सोझा प्रभाव लोकक स्वास्थ्य आ शरीर पर पड़ई छैक ताहि दुआरे ई मामिला संवेदनशील छैक। मामिला के गंभीरता के ध्यान मे

राखैत केंद्र सरकार फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया के तत्वाधान मे एकटा नव कानून बनेलक अछि जकरा -डिप्लोमा इन फार्मेसी एग्जिट एग्जामिनेशन नियमन, 2022- नाम देल गेल छैक।

डिप्लोमा इन फार्मेसी (D.Pharm) एकटा द्विवर्षीय पूर्णकालिक कोर्स छी, जे विद्यार्थी कैँ अस्पताल, सामुदायिक फार्मेसी आ अन्य फार्मास्युटिकल क्षेत्र में काज करबाक लेल तैयार करैत अछि। ई कोर्स इंटर (बारहमा) विज्ञान विषय से पढ़ल विद्यार्थी कऽ सकय छैथ। एहि कोर्स के पूरा करबाक बाद, विद्यार्थी अपन करियर के नाना तरहक सार्वजनिक आ निजी क्षेत्र में विकसित कऽ सकैत छथि। सरकारी अस्पताल, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, शैक्षिक संस्थान, निजी अस्पताल, ड्रग स्टोर, फार्मास्युटिकल कंपनी आ रिसर्च एजेंसी में D.Pharm पास कयनिहार विद्यार्थी के लेल रोजगारक अवसर भेंट सकय अछि। सरकारी अस्पताल, सेना आ रक्षा सेवा में कै टा पद उपलब्ध अछि, जखन की निजी क्षेत्र में फार्मासिस्ट, प्रोडक्शन एक्जीक्यूटिव, एनालिटिकल केमिस्ट आ रिसर्च ऑफिसर केर पद पर काज कऽ सकैत अछि। डिप्लोमा इन फार्मेसी पास कयनिहार विद्यार्थी अपन अध्ययन के आगा बढ़ेबाक लेल B.Pharm आ ओकर बाद स्नातकोत्तर डिग्री के पढ़ाई कऽ सकैत छथि। फार्मास्युटिकल अध्ययनक संगहि कानून केर क्षेत्र में सेहो अपन करियर बनाबय के लेल विद्यार्थी विचार कऽ सकैत छथि।

**डिप्लोमा इन फार्मेसी एग्जिट एग्जामिनेशन नियमन, 2022:**

फार्मेसी एक्ट, 1948 (8 ऑफ 1948) केर धारा 10 आ 18 द्वारा प्रदत्त शक्तिक प्रयोग करैत, फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया, केंद्रीय सरकारक स्वीकृति सँ "डिप्लोमा इन फार्मेसी एग्जिट एग्जामिनेशन नियमन, 2022"

लागू कएलक अछि। एहि नियमनक मुख्य उद्देश्य अछि जे डिप्लोमा इन फार्मेसी (D.Pharm) कोर्स पूरा कएने विद्यार्थी जे राज्य फार्मेसी काउंसिल में पंजीकरण लेल आवेदन करैत छथि, ओ सभ फार्मेसी शिक्षा आ व्यावहारिक प्रशिक्षणक संगहि अपन कर्तव्य आ जिम्मेदारिकेँ व्यावसायिकता सँ निभाबय  मे सक्षम होथि। डिप्लोमा इन फार्मेसी एग्जिट एग्जामिनेशन (DPEE) केर मुख्य उद्देश्य अछि जे पंजीकरण लेल आवेदन कयनिहार उम्मीदवारक फार्मेसी शिक्षा आ व्यावहारिक प्रशिक्षणक अनुपालनक पुष्टि करब। एहि एग्जामिनेशन सँ पास भेलाक बाद, विद्यार्थीकेँ औषधि वितरण आ अन्य फार्मेसी प्रैक्टिस केर कोर कंपेटेंसीक संगहि अनुशासन, सत्यनिष्ठा, निर्णयशक्ति, कौशल, ज्ञान आ सीखबाक उत्साह केँ पुनः पुष्टि कएल जाइत अछि जै से कि ओ अपन कर्तव्य आ जिम्मेदारीक निर्वाह व्यावसायिकता सँ कऽ सकथि।

एहि नियमनक लागू होयबाक बाद, खाली ओहि उम्मीदवार केर पंजीकरण फरमासिस्ट के रूप मे कएल जाएत जिनका लग मान्यता प्राप्त डिप्लोमा इन फार्मेसी कोर्स आ एग्जिट एग्जामिनेशन में सफलता प्राप्त करबाक प्रमाण पत्र होयत। ई नियमन पहिने सँ पंजीकृत फार्मासिस्ट पर लागू नहि होयत।

नियमक अनुसार, -डिप्लोमा इन फार्मेसी एग्जिट एग्जामिनेशन (DPEE) केर उद्देश्य अछि कि जे उम्मीदवार राज्य फार्मेसी काउंसिल में पंजीकरण लेल आवेदन करैत छथि, ओ सभ फार्मेसी शिक्षा आ व्यापक व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम मे न्यूनतम सैद्धान्तिक आ व्यवहारिक ज्ञान

अर्जित कऽ लेबाक पुष्टि करथि जे डिप्लोमा इन फार्मेसी (D.Pharm) कोर्स में फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा धारा 12 तहत मान्यता प्राप्त संस्थान में शिक्षा प्राप्त कएल गेल होय।

डिप्लोमा इन फार्मेसी एग्जिट एग्जामिनेशन पास करबाक बाद, उम्मीदवार कैँ फार्मासिस्ट केर रूप में पंजीकरण लेल फार्मेसी एक्ट, 1948 केर धारा 32(2) केर शर्तक अनुसार पंजीकरण कएल जाएत। पंजीकरणक लेल आवेदन राज्य फार्मेसी काउंसिल के रजिस्ट्रार के कैल जा सकय अछि, संगहि फार्मेसी एक्ट केर धारा 46(2)(g) अनुसार निर्धारित शुल्क आ दस्तावेज संलग्न करबाक दरकार रहत।

फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया आ राज्य फार्मेसी काउंसिल सभकैँ लेल - डिप्लोमा इन फार्मेसी एग्जिट एग्जामिनेशन (DPEE)- केर संचालन, परिणाम प्रकाशित करबाक आ परिणामक प्रतिलिपि प्रदान करबाक जिम्मेदारी आयुर्विज्ञान राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड (NBEMS) के देल गेल अछि NBEMS केर भूमिका परीक्षा संचालन, परिणाम प्रकाशित करबाक आ परिणामक प्रतिलिपि फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया आ सभ राज्य फार्मेसी काउंसिल सभकैँ हस्तांतरित करबाक अछि। डिप्लोमा इन फार्मेसी एग्जिट एग्जामिनेशन (DPEE)- केर पहिल परीक्षा एनबीईएमएस द्वारा एहि साल अर्थात 2024 मे लेल जेबाक संभावना छैक जकरा लेल आवेदन के प्रक्रिया पूर्ण कैल गेल छैक।

फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया समय-समय पर एग्जिट एग्जामिनेशन आ ओकर पाठ्यक्रमक योजना घोषित करत। उम्मीदवार एक वर्ष में दू बेर एग्जामिनेशन में शामिल भऽ सकैत छथि, या जेतेक बार परीक्षा होयबाक योजना घोषित कएल गेल होय। परीक्षा तीन पेपरक होयत, जकरा अंतर्गत फार्मास्युटिक्स, फार्माकोलॉजी, फार्माकोग्नोसी, फार्मास्युटिकल

केमिस्ट्री, बायोकैमिस्ट्री, हॉस्पिटल आ क्लीनिकल फार्मेसी, फार्मास्युटिकल ज्यूरिस्प्रुडेंस आ ड्रग स्टोर मैनेजमेंट विषय शामिल होयत। परीक्षा केर भाषा अंगरेजी होयत आ प्रत्येक पेपरक अवधि तीन घंटाक होयत। उम्मीदवारक पास होय लेल प्रत्येक पेपर में 50% अंक प्राप्त करब अनिवार्य अछि। उत्तीर्ण हेबाक लेल एकहि प्रयास में तीनों पेपर पास करब जरूरी अछि, लेकिन परीक्षा में शामिल होबाक प्रयासक संख्या पर कोनो प्रतिबंध नहि अछि। सफल उम्मीदवार कैँ पंजीकरण आ अभ्यासक पात्रता प्रमाणपत्र जारी कएल जाएत छैक, जे ऐ कानून के लागू भेलाक बाद राज्य फार्मेसी काउंसिल में पंजीकरण हेतु प्रस्तुत करब अनिवार्य छैक।

लोक रोजगारक लेल चारि सौ बीसी से एमहर आमहर जोगार लगा के गलत तरीका से अलग अलग क्षेत्र मे घुसि जाय छईथ मुदा हुनका मे ओहि पेशा के लेल नै सक्षमता रहय छैक आ नै तन्मयता। एकर नोकसान जनता के भोगऽ परय छैक। जखन कि लोक मेहनत करय त सोझ रास्ता से सेहो लक्ष्य प्राप्त कैल जा सकय य। फार्मास्युटिकल डिस्ट्रिब्यूशन समुदाय स्वास्थ्य प्रणाली मे एकटा महत्वपूर्ण घटक छैक। ताहि लेल ई आवश्यक अछि जे ऐ तंत्र मे अक्षम लोक सब के घुसबा से रोकब। ई कानून एहि के धन मे राखि के आनल गेल अछि। परीक्षा के विषय मे विस्तृत जनतब फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया के वेबसाइट https://www.pci.nic.in/ आ एनबीईएमएस के वेबसाइट https://natboard.edu.in/viewnbeexam?exam=dpee पर प्राप्त कैल जा सकय अछि।

-प्रणव झा, राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्ली

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## पद्य

३.१.प्रमोद झा 'गोकुल'-किए भेलह तों मनुज?

३.२.प्रणव झा-अम्मल

३.३.राज किशोर मिश्र-अन्हार सँ इजोत

३.४.संतोष कुमार राय 'बटोही'-उर्मिलाक विद्रोह (धारावाहिक खण्ड-काव्य)

## ३.१.प्रमोद झा 'गोकुल'-किए भेलह तों मनुज?



**प्रमोद झा 'गोकुल'**
**किए भेलह तों मनुज?**

जे चराबथि सासुरमे बकरी
सैह कहाबथि परम बुधियार
वैह कहाबथि कहबैका बड़का
आरक पदबी भेल फकसियार ।
अवसर देखि सुतारथि गोटी
सेखी बघारथि रहनि ठाढ़े चोटी
परदोष निहारब हुनक बपौटी
अप्पन धरि राखथि टुटले टोटी ।
मुहंॅ मे राम बगल मे छूरी
अँतड़ी घुरछल बहत्तैर हाथ
माथ पाग कान्ह दुपट्टा ओकरे
तिलक भाल पुर्णिमाक साथ ।
तोहर भाग मे घोर अमावस
दिन दुपहरि अस्त सुरुज

मस्त भय भोगह सबटा
किएक भेलह तों मनुज ?

-प्रमोद झा 'गोकुल', दीप,मधुवनी (विहार), फोन -9871779851

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२.प्रणव झा-अम्मल



**प्रणव झा**

**अम्मल**

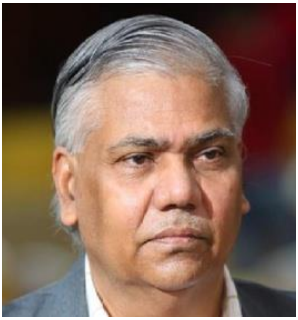
जे खाय अछि गुटका
भऽ जाय अछि गलचुटका।
जे खाय अछि पान
दै अछि सभ के ज्ञान।
जे पीबय अछि चाय
तरोताजा भऽ जाय।
रोज पिबय जे दारू
भऽ जाय अछि बीमारू।
जे पीबय अछि पानि
बनल रहय अछि जुआनि।
पैघ के करय जे आदर
पाबय नेहक चादर।
जे पोथी पढय अछि
ज्ञान ओकर बढ़य अछि।
भोरे करय जे ध्यान

होय ओकर कल्याण।
जे मेहनत करय अछि
आगा ओ बढ़य अछि।
नेह बढाबय अछि जे
नेहे पाबय अछि ओ।
ताकय जे मंच माला
बुझु दाल मे काला ।
चलु आब हम जाय छी
घुरि-फिरि के आबय छी।

- *प्रणव झा [राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड]*

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.३.राज किशोर मिश्र-अन्हार सँ इजोत



**राज किशोर मिश्र**

**अन्हार सँ इजोत**

नभ सँ ता कि रहल अछि उड्गण,
अन्हा र-का जर सँ पो तल वसुधा ,
अवनि क देह पर चढ़ल को ना कऽ,
जहर आसुरी ? ओ छलि दुद्धा ।

एकरे बेऔँत मे बैसल अछि ,
ति मि र-षड्यंत्रक अपन जो गा ड़,
उजरा मंत्रक स्वर ओझरा एल,
खो ललक भरम अपन व्या पा र।

फोँ फ कटैत अछि ,मो नक सी धा ,
नि शा चर सा धि रहल नि ज ध्येय,
घुरमी ला गल धवल-तंत्र कैँ,
छि पल जो ति को ना हो एत प्रमेय ?

खञ्ज-खो हड़ सन अछि इजो त,
अछि प्रभा ही न, भऽ गेल अथबल,
मो नक को न अधो गति ओक्कर?
दुबकल, बैसल अछि ओ कलबल।

ई करि आ-तंत्रक को नो अनुष्ठा न् ,
जि नगी पर वि ध्नक चलल वा ण।

दि वा जेना अभि शप्त भेल हो अए,
ध्वां त साँ झ मे रहैत अछि काँ च,
अन्हा रक सबतरि सजल मञ्च,
हेतै रा ति का पा लि क ति मि रि आ ना च ।

हो एत उजो र प्रति क्षा रत,
सा मर्थ्य क फेर करत संधा न,
दुनि आँ ओकर भरो से सूतल,
करत नव दि नक अनुसंधा न।

एही अन्हा र मे गम्हरा एल ,
भी तरे-भी तर इजो त,
ति मि र-जलधि मे फेरो सँ,
उतरत को नो पो त ।

अन्हा रक सघन बो न मे,
गमकत जो ति क चा नन ,

सरसि ज सूँघत अरुण-कि रि न,
चमकत वसुधा -आनन।

इजो तक धवल शृङ्गा र सँ,
क्षि ति जक सजत पुबरि आ मुह,
संघर्षक सि नुरि आ अङ्गरा ग सँ,
पो छल देखि , खग बा जत 'कूह'।

प्रका शक महा समुद्र मे,
तमि स्त्रा क अस्थि -वि सर्जन,
आएल ओ बेर, अरुणा भ सँ,
सृष्टि -उदयक हो एत सर्जन।

नभ मे इजो तक कोँ ढ़ी फूटल,
अन्हा रक का री का जर छूटल ।

पुनर्स्था पि त उद्यो त मे,

अन्हा र-प्रलय सँ उबरल धरणी ,
जि नगी क नवल दि वसक सृजन,
ति मि रक भेल गो दा न-वैतरणी ।

करि आ-झुम्मड़ि खूब खेला एल,

का लक को नो तंत्र,
समयक को नो मुह अछि चमकल,

उत्था नक ई मंत्र ।

दि वसक उज्जर दप -दप आनन,
पा ड़ल ओहि पर इजो तक चा नन।

पाँ खि खो लि नभ मे उड़ल अछि ,

बढ़ल दूर खगरा ज,
सुनबैत व्यो म कैँ ,भि नसर ई,
तमि स्त्रा सँ भेटल स्वरा ज।

भो रक सौं दर्य-र्य पसा हनि मे,
ला गल अछि खि लल प्रसून,
ऊर्जा -पा ग मे बो ड़ल अछि ,
अछि मि ठगर का ल्हि सँ दून।

डूबि क' दि वा ऊगल अछि ,
अनुभवक ठेढ़ पर ठा ढ़ ,
दि वस जि अत जि नगी पूर्ण,
बुझि तहुँ आओत अन्हा र।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## ३.४.संतोष कुमार राय 'बटोही'-उर्मिलाक विद्रोह (धारावाहिक खण्ड-काव्य)



**संतोष कुमार राय 'बटोही'**

**उर्मिलाक विद्रोह (धारावाहिक खण्ड-काव्य)**

सखि ! के बुझत हमर बतिया !
केना बीतैत अछि हमर रतिया ।
माथ मे की लिखलाथि बिधना ?
की अधरम भेल कोन दिना ?

गौड़ी पुजलहुँ महादेव पुजलहुँ ।
ब्रहम पुजलहुँ शनिदेव पुजलहुँ।
सखि ! साजन भेल हमर परदेश ।
हमहुँ चलितहुँ वन पहिर साधुवेश।

नहि देखलाथि एक बेर फिरि ई आँखिक नोर ।
लखनक हिया भेल पाथर टुटल नेहियाक डोर ।
मधु मास बितल साउन बितल माघ भेल बड़ कठोर।
दरद उठल हिया मे फाटि रहल अछि अंग पोर -पोर !

सखि ! मरि रहल उर्मि संदेश पठाउ  लखन कैँ ।
कतेक दिन आओर लगतन्हि वन मे बलम कैँ ?
अगर पति धरम होयत छै तँ पत्नी - धरम नहि ?
भाय लेल केलाथि  हमरा लेल कोनहुँ करम नहि।

ई भवन,ई साज-सज्जा,ई तोशक, ई मखमल ।
लखन बिन हमरा लेल मिश्री-मेवा भेल गरल ।
सखि ! एकटा पोखरि खुनाउ लेब जलसमाधि ।
नहि रखवाक रहन्हि संगे तँ  कियाक केलाथि शादी ।

सीता बहिन वन गेलीह  जेठ केर संग ।
हम की कऽ दतियैन्ह हुनकर कर्म भंग ?
एक बेरि तँ हमरो मौका दैतियै यौ निर्मोही।
उर्मिला केर चरण स्पर्श करैत अछि बटोही।

**-संतोष कुमार राय 'बटोही' , ग्राम - मंगरौना, पोस्ट - गोनौली, भाया - अंधराठाढ़ी, जिला - मधुबनी, बिहार-८४७४०१ मोबाईल नं० 6204644978; सम्प्रति - शिक्षक।**

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

